RNI: UPHIN/2015/60902

राजधानी से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

www.theachivertimes.com

द अचीवर टाइम्स

डाक पंजीयन संख्या
एस.एस.पी.एल.डब्लू/एन
पी.439/2015-2017

वर्ष : 9 अंक : 247
पृष्ठ : 8 मूल्य : 3 रुपया
लखनऊ, सोमवार, 01 जनवरी, 2024

एक नज़र

लाल सागर में फिर हुआ जहाज पर हमला

वॉशिंगटन। अमेरिका ने हूती विद्रोहियों की तरफ से दागे गए दो एंटी शिप मिसाइलों को निशाना बनाकर तबाह कर दिया है। ये मिसाइलें लाल सागर के इलाके में एक कंटेनर शिप को निशाना बनाते हुए यमन से हूती विद्रोहियों द्वारा दागे गए थे। हाल ही में भी अमेरिका ने लाल सागर में हूती विद्रोहियों के एंटी शिप मिसाइल और ड्रोन हमले को नाकाम किया था। यह तीन दिन में दूसरा हमला था, जिसे अमेरिका ने नाकाम कर दिया।

यूक्रेन का रूस पर जवाबी हमला, रूसी शहर पर की भारी बमबारी, 20 लोगों की मौत

मॉस्को। रूसी अधिकारियों ने एक बयान में कहा कि बेलगोरोड पर क्लस्टर बमों से ताबड़तोड़ हमले किए गए। यूक्रेन के हमलों में दो बच्चों सहित 20 लोग मारे गए और 111 घायल हो गए। साथ ही रूस ने भी जवाबी कार्रवाई करने की बात कही है। रूस और यूक्रेन के बीच एक बार फिर से संघर्ष तेज हो गया है। रूस के हालिया हवाई हमलों के जवाब में यूक्रेनी सेना ने शनिवार को रूसी शहर बेलगोरोद पर भारी बमबारी की, जिसमें दो बच्चों सहित 20 लोग मारे गए। रूसी अधिकारियों ने एक बयान में कहा कि बेलगोरोद पर क्लस्टर बमों से ताबड़तोड़ हमले किए गए। यूक्रेन के हमलों में 111 अन्य लोग घायल हुए हैं। बेलगोरोद शहर उत्तरी यूक्रेन की सीमा के पास है। रूसी रक्षा मंत्रालय ने कहा, मॉस्को, ओरयोल, ब्रांस्क और कुर्स्क क्षेत्रों के आसमान पर भी ड्रोन देखे गए हैं। साथ ही रूसी रक्षा मंत्रालय ने जवाबी कार्रवाई करने की बात कही है। रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि यूक्रेन की सरकार अग्रिम मोर्चे पर हुई हार से ध्यान हटाने और हमें भी इसी तरह की कार्रवाई करने के लिए उकसाने की कोशिश कर रहा है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, यूएन में रूस के उप-स्थायी प्रतिनिधि दिमित्री पोलांस्की ने कहा कि यूक्रेन के हमले के बाद रूस ने संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की आपातकालीन बैठक बुलाने को कहा है।

2024 में राम से होगा विपक्ष का मुकाबला

मोदी की गारंटी, कमंडल में मंडल से भाजपा को जीत की उम्मीद

एजेंसी

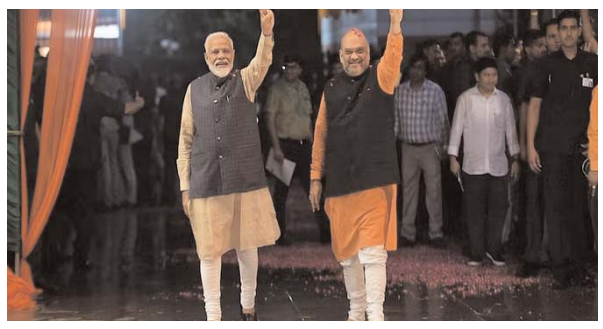

नई दिल्ली। एक सर्वे में यह बात सामने आई है कि पहली बार वोट करने जा रहे नए मतदाताओं में राम मंदिर मुद्दे का आकर्षण बना हुआ है और पहली बार वोट करने वाले युवाओं की एक बड़ी संख्या भाजपा को वोट कर सकती है। 2029 के लोकसभा चुनाव में पहली बार वोट करने वाले युवाओं की संख्या लगभग आठ करोड़ थी, इस बार यह आंकड़ा आश्चर्यजनक रूप से 15 करोड़ के लगभग हो सकती है।

अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम को भव्य बनाने के लिए आरएसएस-भाजपा-विहिप ने अपनी पूरी ताकत झोंक दी है। हर राज्य के हर जिले से लेकर मंडल और बूथ स्तर तक कार्यक्रम कर ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुंच बनाने की हर संभव कोशिश की जा रही है। इससे यह स्पष्ट हो गया है कि भाजपा राम मंदिर निर्माण को 2024 के लोकसभा चुनाव में अपना प्रमुख चुनावी एजेंडा बनाएगी। यानी 2024 की लड़ाई में विपक्ष का मुकाबला राम के मुद्दे से होगा। क्या विपक्ष इसका मुकाबला कर पाएगा?

माना जा रहा था कि राम मंदिर का मुद्दा अब पुराना पड़ चुका है और अब भाजपा इसका कोई राजनीतिक लाभ नहीं ले सकेगी। इसके पीछे एक तर्क यह भी था कि हिंदुत्व और राम मंदिर मुद्दे के कारण जिन मतदाताओं को प्रभावित होना था, वे पहले ही प्रभावित हो चुके हैं और अब भाजपा को ही वोट कर रहे हैं। ऐसे में संभावना थी कि राम मंदिर के नाम पर भाजपा से नए मतदाता नहीं जुड़ेंगे और यह उसके लिए बहुत लाभदायक नहीं होगा।

एक सर्वे में यह बात सामने आई है कि पहली बार वोट करने जा रहे नए मतदाताओं में राम मंदिर मुद्दे का आकर्षण बना हुआ है और पहली बार वोट करने वाले युवाओं की एक बड़ी संख्या भाजपा को वोट कर सकती है। 2029 के लोकसभा चुनाव में पहली बार वोट करने वाले युवाओं की संख्या लगभग आठ करोड़ थी, इस बार यह आंकड़ा आश्चर्यजनक रूप से 15 करोड़ के लगभग हो सकती है। हर लोकसभा क्षेत्र में फैले इस विशाल मतदाता समूह पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, राम मंदिर, हिंदुत्व और राष्ट्रवाद के मुद्दे का व्यापक प्रभाव है और इनका एक बड़ा समूह भाजपा को वोट कर सकता है। यदि ऐसा होता है तो मोदी को केंद्र में हैट्रिक लगाने में कोई मुश्किल नहीं आने वाली है।

साल के अंत में सब कुछ ठीक करने की कोशिश

2022 के अंत में भाजपा को हिमाचल प्रदेश विधानसभा चुनाव में हार का सामना करना पड़ा था तो 2023 के मध्य में कर्नाटक में उसे मुंह की खानी पड़ी। लेकिन 2023 का अंत आते-आते भाजपा ने छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और राजस्थान में विधानसभा चुनाव जीतकर 2024 को लेकर अपनी दावेदारी मजबूत कर दी।

श्रीराम मंदिर, मुख्यमंत्री योगी और एसटीएफ चीफ को बम से उड़ाने की धमकी

एजेंसी

लखनऊ। श्रीराम मंदिर, सीएम योगी और एसटीएफ चीफ को बम से उड़ाने की धमकी दी गई। धमका भरा ई-मेल भारतीय किसान मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी को भेजो गया। देवेंद्र को भी मारने की धमकी दी गई है। ई-मेल भेजने वाले ने खुद को आईएसआई से जुड़ा बताया है। यूपी-112 के इंस्पेक्टर की तहरीर पर सुशांत गोल्फ सिटी थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस के साथ एटीएस वको प्रकरण की जांच में लगाया गया है। ई-मेल करने वाले ट्रेस किया जा रहा है। एफआईआर यूपी-112 में तैनात इंस्पेक्टर सहेंद्र कुमार ने दर्ज कराया है। एफआईआर के मुताबिक देवेंद्र तिवारी ने यूपी-112 को एक शिकायत ट्विटर पर टैग की। जिसमें बताया गया कि आईएसआई जुबेर खान की तरफ से उनको 27 दिसंबर की शाम 7 बजकर 37 मिनट पर एक ई-मेल भेजा गया। जिसमें लिखा गया कि सीएम योगी, एसटीएफ चीफ अमिताभ यश ने जीना हराम कर रखा है। तुम भी (देवेंद्र तिवारी) बहुत गो सेवक बने हो। इसलिए सभी को बम से उड़ा दिया जाएगा। अयोध्या श्रीराम मंदिर को भी उड़ाएंगे। इसकी जिम्मेदारी आईएसआई ले रहा है।

2024 आम चुनाव की अभी यह अंगड़ाई

फरवरी से शुरू होगी चुनावी लड़ाई

एजेंसी

नई दिल्ली। भाजपा के नेता अब दावा करने लगे हैं कि 2024 के लोकसभा चुनाव में एनडीए 350 सीटों के आंकड़े को पार करेगी। उत्तर प्रदेश के एक उपमुख्यमंत्री कहते हैं कि राम मंदिर में भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा हो जाने दीजिए। इसके बाद 2024 में भाजपा को 70 सीटों से नीचे मत गिनिए।

कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजे ने कांग्रेस के उत्साह को बढ़ा दिया था, लेकिन राजस्थान, छत्तीसगढ़ और मध्य प्रदेश के नतीजे ने मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस के हौसले पर करारी चोट की है। पार्टी इससे उबरने का रास्ता तलाश रही है। नागपुर में कांग्रेस का अधिवेशन, राहुल गांधी की 6200 किमी की भारत न्याय यात्रा की जिद, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा की उत्तर प्रदेश के प्रभारी पद से मुक्ति को इसी का हिस्सा माना जा रहा है। इसके समानांतर सत्ताधारी दल उत्साह से लबरेज है। भाजपा की सत्ता के ब्रांड अंबेसडर होते जा रहे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को हराना विपक्ष के लिए सबसे बड़ी चुनौती है। विपक्ष के नेता और पूर्व केन्द्रीय मंत्री थोड़ा तंज कसते हुए कहते हैं कि अब तो मोदी की गारंटी भी चलने लगी है। यह कहने में संकोच नहीं कि प्रधानमंत्री मोदी राजनीति की बारीकियों के मर्मज्ञ और जनता की नब्ज टटोलने में माहिर हैं। उन्होंने कर्नाटक विधानसभा चुनाव के नतीजे के बाद आए पांच राज्यों के चुनाव नतीजों को बड़ी संवेदनशीलता के साथ लिया है। उनके मार्ग दर्शन में केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह और भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा ने न केवल तीन राज्यों में मुख्यमंत्री और वहां के मंत्रिमंडल की रुपरेखा से चौंकाया है, बल्कि इस सुनहरे अवसर को हर हाल में भुना लेने की रणनीति पर काम कर रहे हैं। भाजपा के भीतर बढ़े उत्साह ने पार्टी के आधा दर्जन प्रवक्ताओं के चेहरे पर चमक लौटाई है।

2024 में बड़ी लड़ाई कई राज्यों में भाजपा को मिलेगी चुनौती

नई दिल्ली। कांग्रेस पार्टी के नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री हैं। तमाम सवालों के जवाब के बाद उन्होंने कहा कि यह कोई इंटव्यू नहीं है। छाप न दीजिएगा? अब जो कहा वह सुन लीजिए? वह कहते हैं कि इंडिया गठबंधन की हर राज्य में जरूरत नहीं है। जैस मध्य प्रदेश, राजस्थान, छत्तीसगढ़,उत्तराखंड, हिमाचल,कर्नाटक, हरियाणा, पंजाब। लेकिन उ.प्र., बिहार, झारखंड, महाराष्ट्र जैसे तमाम राज्यों में इसे मजबूती देने की जरूरत है।

हड़बड़ी में 2024 लड़ेगा तो विपक्ष कीमत चुकाएगा

नई दिल्ली। राजनीतिशास्त्री हैं जनता के हित का एजेंडा छोड़िए, विपक्ष अपना खुद का एजेंडा नहीं तय कर पा रहा है। विपक्ष का पहला एजेंडा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को हटाओ होना चाहिए। क्योंकि अब वह सत्ता के ब्रांड अम्बेसडर हैं। वह खुद की छवि को ही जनता में स्थापित करते चले जा रहे हैं। लेकिन इस एजेंडे को सेट करने में दो चीजें आड़े आ रही है। पहली यह कि कांग्रेस को मुख्य आधार देकर ज्यादा सीटें दे दें तो क्षेत्रीय दल सिमटने के खतरे से परेशान हैं। कांग्रेस उनके लिए अधिक सीटें छोड़ दे तो उ.प्र. और बिहार जैसा हाल होने का डर है। एसके सिंह कहते हैं कि एक बात और है। इसे प्रधानमंत्री मोदी, गृह मंत्री शाह और भाजपा अध्यक्ष पूरी शिद्दत से समझते हैं। इसलिए वह विपक्ष को एक होने से रोकने का हर उपाय करने से नहीं चूकते। फिर यह कहावत तो पुरानी है कि फूट डालो

राम मंदिर के नाम पर बड़ा फ्रॉड

सोशल मीडिया पर भी मांगे जा रहे पैसे विहिप ने दर्ज कराई शिकायत

एजेंसी

नई दिल्ली। डीजीपी उत्तर प्रदेश को भेजी गई शिकायत में विहिप ने कहा है कि यह राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम को बदनाम करने का प्रयास है। इसके जरिए अवैध रूप से लोगों से पैसा वसूला जा रहा है। पुलिस से इस फ्रॉड के पीछे छिपे काम कर रहे लोगों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर उचित कानूनी कार्रवाई करने की अपील की गई है।

राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम को लेकर एक और बड़ा फ्रॉड सामने आया है। सोशल मीडिया पर श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के नाम से फर्जी एकाउंट बनाकर लोगों से दान के रूप में पैसे मांगे जा रहे हैं। सोशल मीडिया के लोकप्रिय प्लेटफॉर्म पर क्यूआर कोड वितरित कर लोगों से राम मंदिर के उद्घाटन में ज्यादा से ज्यादा सहयोग करने की अपील की जा रही है। विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने इसके विरुद्ध उत्तर प्रदेश पुलिस और दिल्ली पुलिस के पास शिकायत दर्ज कराई है। इसके पहले राजस्थान में राम मंदिर के नाम से पर्ची काटकर लोगों से चंदा लिए जाने का मामला सामने आया था। फेसबुक पर श्री राम जन्मभूमि तीर्थ श्रेत्र ट्रस्ट के नाम से एक प्रोफाइल बनाकर क्यूआर कोड शेयर किया गया है। प्रोफाइल अभिषेक कुमार के नाम से बनाई गई है। प्रोफाइल पर राम भक्तों से अपील की गई है कि वे राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम के लिए बढ़चढ़कर दान करें। इसी प्रकार एक यूपीआई नंबर (9040914736@paytm) जारी करते हुए इस पर राम मंदिर के लिए दान करने की अपील की जा रही है। यह प्रोफाइल मनीषा नल्लाबेली के नाम से बनाई गई है। व्हाट्सएप ग्रुपों में भी इसी तरह के संदेश भेजकर लोगों से पैसे मांगे जा रहे हैं। डीजीपी उत्तर प्रदेश को भेजी गई शिकायत में विहिप ने कहा है कि यह राम मंदिर के उद्घाटन कार्यक्रम को बदनाम करने का प्रयास है। इसके जरिए अवैध रूप से लोगों से पैसा वसूला जा रहा है। पुलिस से इस फ्रॉड के पीछे छिपे काम कर रहे लोगों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर उचित कानूनी कार्रवाई करने की अपील की गई है।

बलूचिस्तान में पाकिस्तानी सेना और आतंकियों के बीच मुठभेड़

पांच आतंकी ढेर, हथियारों का मिला जखीरा

एजेंसी

कराची। पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रांत में सैन्य कार्रवाई में पांच आतंकवादियों को मौत के घाट उतारा गया है। पाकिस्तानी सेना द्वारा जारी बयान में कहा गया कि आतंकवादियों के ठिकानों से हथियारों, गोला-बारूदों का जखीरा मिला हैं। पाकिस्तान के अशांत बलूचिस्तान प्रांत में एक मुठभेड़ में पांच आतंकवादी को मौत के घाट उतार दिया गया है। पाकिस्तानी सेना ने रविवार को इस बारे में जानकारी दी हैं। सेना ने बताया कि बीती रात को एक खुफिया ऑपरेशन के दौरान जवानों और आतंकवादियों के बीच मुठभेड़ हुई, जिसमें पांच आंतकियों को मौत के घाट उतार दिया गया हैं। सेना के मुताबिक, आतंकवादियों के ठिकानों से कई हथियार, गोला बारूद और विस्फोटकों का जखीरा बरामद किया गया हैं। पाकिस्तानी सेना ने कहा कि आतंकवादियों के खात्मे के लिए देशभर में अभियान चलाया जा रहा है। पाकिस्तान की सेना ने बयान में कहा कि पाकिस्तान के सुरक्षा बल राष्ट्र के साथ कदम मिलाकर बलूचिस्तान की शांति, स्थिरता और प्रगति को नुकसान पहुंचाने के प्रयासों को विफल करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। गौरतलब हैं कि पाकिस्तान में हाल के महीनों में खैबर पख्तूनख्वा और बलूचिस्तान में आंतकी हमलों में बढ़ोतरी देखी गई हैं। एक दिन पहले सेना ने कहा कि खैबर पख्तूनख्वा के उत्तरी वजीरिस्तान जिले के मीर अली इलाके में एक ऑपरेशन के दौरान पांच आंतकियों को मौत के घाट उतारा गया हैं। दिसंबर माह के शुरुआत में एक ही दिन में दो अलग-अलग आतंकी घटनाओं में 25 पाकिस्तानी जवानों की मौत हो गई थी, जिसमें डेरा इस्माइल खान में एक आंतकवादी हमला भी शामिल था। इस साल आतंवादी हमलों में सेना में एक दिन में मरने वालों की यह सबसे बड़ी सख्या थी।

2014 के बाद सबसे ज्यादा आत्मघाती हमले

कराची। पाकिस्तान इंस्टीट्यूट फॉर कॉन्फ्लिक्ट एंड सिक्योरिटी स्टडीज (पीआईसीएसएस) द्वारा जारी आंकड़ों के मुताबिक, देश में इस साल 2014 के बाद से सबसे ज्यादा आत्मघाती हमले हुए, जिनमें से लगभग आधे सुरक्षा बलों को निशाना बनाकर किए गए। कम से कम 48 प्रतिशत मौतें सुरक्षा बलों के कर्मियों की हुई हैं।

तहरीक-ए-हुर्रियत को सरकार ने किया प्रतिबंधित

जम्मू-कश्मीर में इस्लामिक शासन लागू करने की साजिश का आरोप

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्र सरकार ने पाकिस्तान समर्थक अलगाववादी समूह तहरीक-ए-हुर्रियत (टीईएच) जम्मू-कश्मीर को केंद्रशासित प्रदेश में आतंकवाद को बढ़ावा देने और भारत विरोधी दुष्प्रचार करने के चलते रविवार को प्रतिबंधित संगठन घोषित कर दिया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने इस संबंध में घोषणा करते हुए कहा कि संगठन को जम्मू-कश्मीर में अलगावबाद को बढ़ावा देने के लिए आतंकवादी गतिविधियों को जारी रखते और भारत विरोधी दुष्प्रचार करते हुए पाया गया। अमित शाह ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स पर लिखा, ''तहरीक-ए-हुर्रियत, जम्मू-कश्मीर (टीईएच) को गैरकानूनी गतिविधियां (रोकथाम) अधिनियम के तहत एक 'गैरकानूनी संगठन घोषित किया गया है. यह संगठन जम्मू-कश्मीर को भारत से अलग करने और इस्लामिक शासन स्थापित करने की निषिद्ध गतिविधियों में शामिल है। पाकिस्तान समर्थक इस समूह का नेतृत्व पहले दिवंगत अलगाववादी नेता सैयद अली शाह गिलानी के हाथों में था. इसके बाद इसका नेतृत्व मसर्रत आलम भट के पास आ गया. भट को भारत विरोधी और पाकिस्तान के समर्थन में एजेंडा चलाने के लिए जाना जाता है। भट फिलहाल जेल में है और उसकी पार्टी 'मुस्लिम लीग ऑफ जम्मू कश्मीर को 27 दिसंबर को प्रतिबंधित संगठन घोषित कर दिया गया था।

आम चुनाव के लिए बांग्लादेश में सुरक्षा चाक-चौबंद

1.89 लाख पुलिसकर्मी तैनात, निष्पक्ष मतदान पर जोर

एजेंसी

ढाका। बांग्लादेश में सात जनवरी को होने वाले आगामी आम चुनाव को लेकर राजनीति दलों ने कमर कस ली हैं। सत्तारूढ़ समेत तमाम राजनीतिक दल लगातार लोगों को रिझाने के लिए सभा, रैलियां कर रहे हैं। इसी बीच, मतदान से पहले पूरे बांग्लादेश में 1.89 लाख से अधिक पुलिस कर्मियों को तैनात किया है। विपक्षी दल बीएनपी के बहिष्कार के बीच होने वाले आम चुनाव स्वतंत्र, निष्पक्ष और शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो इसके लिए पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया हैं। एक रिपोर्ट में दावा किया गया कि वर्तमान में देश के पुलिस बल में सिविल स्टाफ सहित लगभग 2.13 लाख कर्मचारी हैं। पुलिस मख्यालय में उप माहनिरीक्षक (ऑपरेशन) अनवर हुसैन ने कहा कि पूरे बांग्लादेश में कुल 1.89 लाख पुलिस कर्मियों को तैनात किया गया हैं, जो मतदान के दिन मजिस्ट्रेटों के साथ चुनाव ड्यूटी पर रहेंगे। इसके अलावा पुलिस कर्मियों स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए क्षेत्रों में गश्त भी लगाएंगे। एक रिपोर्ट के मुताबिक, तकरीबन 1.74 लाख पुलिसकर्मी बिना किसी छुट्टी के ड्यूटी पर रहेंगे, जबकि अन्य पुलिसकर्मी नियमित रुप से काम में लगेंगे। बांग्लादेश की प्रमुख विपक्षी पार्टी बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी द्वारा चुनाव बहिष्कार के चलते देशव्यापी हड़तालें, परिवहन नाकेबंदी का बीच-बीच में आह्वान किया जाता हैं। बीएनपी के मुताबिक, वर्तमान प्रधानमंत्री शेख हसीना के रहते कभी भी देश में निष्पक्ष चुनाव नहीं किए जा सकते हैं। पिछले दो माह में राजनीतिक हिंसा में 11 लोगों की मौत हो चुकी हैं और 386 वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया हैं। राजनीतिक हिंसा में पुलिस ने कई विपक्षी कार्यकर्ताओं और हस्तियों को गिरफ्तार किया हैं, जिनमें बीएनपी के महासचिव मिर्जा फखरूल इस्लाम आलमगीर शामिल हैं। बीएनपी लोगों से लगातार सरकार के खिलाफ सविनय अवज्ञा करने का आह्वान कर रही हैं। साथ ही लोगों से करों और उपयोगिता बिलों का भुगतान न करने का आग्रह किया गया हैं। गौरतलब हैं कि बीएनपी ने 2014 के चुनाव का बहिष्कार किया था, लेकिन 2018 के आम चुनाव में बीएनपी ने भाग लिया था। शुक्रवार को बांग्लादेश ने देशभर में अर्धसैनिक सीमा रक्षकों की 1,151 प्लाटून तैनात की हैं। बॉर्डर गार्ड बांग्लादेश (बीजीबी) के जवान सात जनवरी के मतदान के आसपास 13 दिनों तक पुलिस, रैपिड एक्शन बटालियन (आरएबी) और सशस्त्र बलों के साथ मिलकर काम करेंगे।

कटनी कलेक्टर अवि प्रसाद ने जिले के नागरिकों को दी नए साल की बधाई और शुभकामनाएं

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

कटनी। कटनी कलेक्टर अवि प्रसाद एवं पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन ने जिले के नागरिकों को नए साल की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने मंगलकामना की है कि नववर्ष 2024 सभी कटनी वासियों के लिए सुख, शांति, सद्भाव, समृद्धि और सफलता लेकर आये। कलेक्टर श्री प्रसाद एवं पुलिस अधीक्षक ने कटनी वासियों के जीवन में बेहतर स्वास्थ्य, खुशियां और समृद्धि की कामना करते हुए कुपोषण मुक्त कटनी बनाने और आंगनबाड़ी केंद्रों को गोद लेने, नि-क्षय मित्र बन कर टी.बी. मुक्त जिला बनाने के संकल्प में रचनात्मक सहभागिता निभाने की अपील की है। कलेक्टर ने कहा है कि हम सभी को मिलकर कटनी को सशक्त और सर्वश्रेष्ठ बनाना है। कलेक्टर ने समृद्ध कटनी बनाने और कटनी के चतुर्दिक समावेशी विकास और समृद्धि की यात्रा में सहभागी बनने के लिए प्रत्येक नागरिक से संकल्पित होने का आव्हान किया है। उन्होंने रक्तदान महादान प्रकल्प में भागीदारी निभाकर पीड़ित मानवता की सेवा और जरूरतमंदों की जिंदगी को बचाने के पुण्य कार्य में सहयोग का भी आग्रह किया है। उन्होंने छात्रों विशेष कर बोर्ड परीक्षाओं के छात्रों को पढ़ाई में कड़ी मेहनत करने हेतु प्रेरित करते हुए मिशन -45 के तहत मिशन फाइनल -30 के विषय-वस्तु, प्रश्नों और आधार बुकलेट के माध्यम से तैयारी करने का संदेश दिया है। कलेक्टर और एसपी ने लोगों से नए साल का जश्न सावधानी और सतर्कता से मनाने, नशा मुक्ति अभियान और यातायात नियमों का पालन करने की भी अपील की है। उन्होंने सभी जिलेवासियों को नव?वर्ष पर बेहतर स्वास्थ्य,सुखी और समृद्ध जीवन , खुशहाली एवं तरक्की की शुभकामनाएं दी हैं। श्री प्रसाद एवं पुलिस अधीक्षक ने जिले के जनप्रतिनिधियों, पत्रकारों एवं मीडिया कर्मियों, सामाजिक एवं स्वैच्छिक संगठनों और समाज के सभी वर्गों से जिले के समग्र विकास में बीते वर्ष की तरह नये साल में भी जिला प्रशासन को सहयोग प्रदान देने की अपील की है।

पंजाबी यूथ ब्रिगेड द्वारा बुजुर्गों के संरक्षण में धार्मिक कार्यक्रम आयोजित

❖ अपने परिवार व समाज को साथ लेकर चलना जाने वही सच्चा सम्माननीय व्यक्ति हैः बृजपाल सिंह

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। पंजाबी यूथ ब्रिगेड के अध्यक्ष एकलव्य सिंह सहारा के नेतृत्व एसजेएस ग्रैंड फ्रीगंज रोड में बुजुर्गों के संरक्षण में धार्मिक कार्यक्रमों के आयोजन पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि रामगढ़िया बोर्ड दिल्ली के चेयरमैन सरदार जितेंद्र पाल सिंह (गागी) रहे और मंच का संचालन सरदार करम सिंह केल्सन ने किया। इस संवाद कार्यक्रम के दौरान सिख मिशन उत्तर प्रदेश के इंचार्ज बाबा बृजपाल सिंह ने बताया कि किसी व्यक्ति विशेष को उसके व्यावसायिक कद या राजनीतिक कद के कारण नहीं बल्कि उसके विचारों के कारण सम्माननीय व्यक्ति माना जाना चाहिए और जो अपने परिवार और समाज को साथ लेकर चलना जानता है। वही सच्चा सम्माननीय व्यक्ति है। इस कार्यक्रम में पहुँचे सभी को पंजाबी यूथ ब्रिगेड के टीम ने हैंड कैलेंडर देकर सम्मानित किया और आशीर्वाद प्राप्त किया। इस दौरान कमलदीप अरोड़ा, कपिल साहनी, अमंदीप सिंह, सौरभ सिक्का, कशिश नारंग, नितिन चुग, आशीष गाबा, पम्मी जगदेव, कपिल मुंजाल, सागर मेंहदीरत्ता, लोकेश ग्रोवर, विकी रंधावा, इन्दरप्रीत सिंह सहारा, हनी जगदेव आदि लोग उपस्थित रहे।

पूजित अछत वितरण शोभायात्रा

द अचीवर टाइम्स ,सुशील अवस्थी

महमूदाबाद, सीतापुर। अयोध्या में करीब 500 सालों के लम्बे इंतजार के साथ असंख्य भक्तों के बलिदानों तथा कानूनी लड़ाई के बाद श्री राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की धूम अयोध्या ही नहीं अपितु पूरे देश में है। महमूदाबाद में भी विभिन्न हिंदूवादी संगठनों द्वारा प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का निमंत्रण व पूजित अक्षत घर-घर बांटने की तैयारी है। रविवार की सुबह मां संकटा देवी धाम से अयोध्या से आए पूजित अक्षत कलश के साथ शोभायात्रा का आयोजन किया गया। रविवार की सुबह दस बजे से नगर के ऐतिहासिक मां संकटा धाम से शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गो से गुजरी जहां बड़ी संख्या में लोगों द्वारा पूजित अक्षत कलश का विधवत पूजन अर्चन किया गया। शोभा यात्रा के दौरान लोगों को 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में पहुंचने का न्योता दिया गया। शोभायात्रा के शुभारंभ से पहले भगवान श्री राम व अक्षत भरे कलशों का विधि विधान से पूजन अर्चन हुआ। इसके पश्चात गाजे बाजे के साथ निकाली शोभायात्रा नगर के चिकमंडी चौराहा, बजाजा चौराहा, रामकुंड चौराहा, कोतवाली मार्ग, बस स्टेशन, बजाजा बाजार होती हुई मां संकटा देवी धाम पहुंची। बड़ी संख्या में लोगों द्वारा शोभायात्रा का स्वागत किया गया। शोभा यात्रा में शामिल पूजित अक्षत के साथ भगवान श्री राम के मंदिर का चित्र व पत्रक सभी हिंदू परिवारों में वितरित होने हैं। जिसमें 22 जनवरी को होने वाले प्राण प्रतिष्ठा का निमंत्रण दिया जाएगा। शोभायात्रा के दौरान मां संकटा धाम प्रबंध समिति के अध्यक्ष आरके वाजपेयी, पुजारी पं. पुरुषोत्तम मिश्र, आरएसएस के जिला कार्यवाह राजाराम यादव, जिला प्रचारक सुरेंद्र कुमार, देवेंद्र सिंह, नगर प्रचारक हिमांशु कुमार, आशाराम रस्तोगी, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि शिवकुमार गुप्त, देवेश मिश्र, विहीप के कृतार्थ मिश्र, हरीश मिश्र ,हरीश चंद्र मिश्रा , पूर्व पालिकाध्यक्ष सुरेश वर्मा, अतुल वर्मा, कृष्ण कुमार गुप्त, आंजनेय आशीष, अशोक नाग, शुभम सिंह ,रोशन मिश्रा, गौरव मिश्र, पार्थ अवस्थी लेखा गुप्ता, विशाल गुप्त सहित बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे!!

एक नज़र

लापता युवती का नही मिला सुराग

द अचीवर टाइम्स ,सुशील अवस्थी

महमूदाबाद, सीतापुर। महमूदाबाद कोतवाली क्षेत्र के ऊंचगांव की रहने वाली घर से दवा लेने निकली 25 वर्षीया युवती संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गई। काफी खोजबीन के बाद भी पता न चलने पर परिजनों द्वारा युवती के लापता होने की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस युवती की खोज में जुटी। महमूदाबाद कोतजवाली क्षेत्र के ऊंचगांव की रहने वाली लता उर्फ भानु (25) पुत्री स्व. रामचरित 28 दिसंबर की सुबह घर से दवाई लेने के लिए सीएचसी सरैंया जाने हेतु निकली थी किंतु वह वापस घर नहीं लौटी। काफी खोज करने के बाद भी जब लता का कोई पता नहीं चला तो परिजनों द्वारा लता के गायब होने की सूचना पुलिस को दी गई। पुलिस लापता युवती की खोज में जुटी।

बाइक सवार युवक को ट्रक ने मारी टक्कर, हुई मौत

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया

पारा। पारा कोतवाली क्षेत्र में बुद्धेश्वर ओवर ब्रिज के पास बाइक से जा रहे एक बाइक सवार को ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी टक्कर लगते ही वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसके बाद उसकी घटना स्थल पर ही मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने ट्रक को अपने कब्जे में लेकर शव का पंचनामा भर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। मोहन रोड चौकी प्रभारी सूर्य प्रताप सिंह बताया कि मृतक का नाम चेतन मिश्रा पुत्र विशंभर दयाल मिश्रा निवासी ग्राम मुजफ्फरनगर थाना पूरनपुर जनपद पीलीभीत है, युवक अपनी बुलेट मोटसाइकिल से आलमबाग की तरफ जा रहे थे तभी पीछे से तेज रफ्तार में आ रहे ट्रक ने बाइक में पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। हादसा इतना भीषण था कि युवक की मौके पर ही मौत हो गई ट्रक को कब्जे में ले लिया गया है। मृतक पेशे से अध्यापक था जिला सीतापुर के विद्यालय में वर्तमान समय में तैनात था।

थाना शारदानगर पुलिस द्वारा 01 नफर वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया

द अचीवर टाइम्स रमेश चन्द्र

लखीमपुर खीरी। पुलिस अधीक्षक गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व वांछित/वारण्टी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के अंतर्गत आज दिनांक 31.12.2023 को मु0अ0स0 274/2023 धारा 363/366 भादवि मे 01 नफर वांछित अभियुक्त अरुण उर्फ पंकज मौर्य पुत्र स्व0 देवकी नन्दन मौर्य निवासी ग्राम मुरावन पुरवा थाना शारदानगर जनपद खीरी को रौलीपुल के पास से गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तार अभियुक्त का विवरण अरुण उर्फ पंकज पुत्र स्व0 देवकी नन्दन निवासी ग्राम मुरावन पुरवा थाना शारदानगर जनपद खीरी गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम उ0नि0 देवेन्द्र कुमार सिंह थाना शारदानगर खीरी, हे0का0 वाहिद खां थाना शारदानगर खीरी, का0 चन्द्रभान रावत थाना शारदानगर खीरी।

पेठ गई महिला का थैला चाकू से काटकर ज्वेलरी व नकदी पर अज्ञात ने किया हाथ साफ,थाने में दी तहरीर

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। नगर कोतवाली क्षेत्र में रविवार को रामलीला ग्राउंड में लगने वाली पेठ का मामला सामने आया है जहां मोहल्ला सुभाष नगर निवासी सुरेश नामक महिला अपनी सास के साथ अपने साथ एक कपड़े का थैला लेकर दोपहर के लगभग 3ः00 से 3ः30 के बीच में ?खरीदारी करने गई थी?। इसी बीच उनका थैला किसी अज्ञात ने चाकू से काट दिया और उसमें रखा पर्स गायब हो गया। जिसमें कानो की सोने की बाली,चांदी के कंगन व 35 सौ रुपए तथा आधार कार्ड रखा हुआ था जब महिला ने अपने पर्स की काफी तलाश की। लेकिन जब पर्स नहीं मिला तो महिला ने गुमशुदा हुए पर्स की थाना हापुड़ नगर कोतवाली में तहरीर देकर आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है।

बचने के लिए खूब लड़ी किशोरी, शरीर पर मिले चोट के कई निशान

झांसी। शुक्रवार को बबीना थाना इलाके में किशोरी की अर्द्धनग्न लाश मिलने से क्षेत्र में सनसनी रही। किशोरी के शरीर पर मिले चोट के निशानों से अंदाजा लगाया जा रहा है कि उसने बचने के लिए खूब संघर्ष किया। इसके अलावा एक से अधिक आरोपी होने की भी आशंका जताई जा रही है। पुलिस इसकी पड़ताल में जुटी हुई है। किशोरी अपने घर से बृहस्पतिवार की शाम छह बजे निकली थी, इसके बाद वापस नहीं लौटी।

मन की बात के 108 वें संस्करण पर महिला मोर्चा द्वारा कार्यक्रम आयोजित

❖ मन की बात में प्रधानमंत्री ने देश की जनता के ठीक स्वास्थ्य फिट रहने व राम मंदिर के लोकार्पण के विषय मे की चर्चा

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री जनप्रिय कार्यक्रम मन की बात के 108 वें संस्करण को महिला मोर्चा हापुड़ की टीम द्वारा सेक्टर-11 बूथ संख्या-109 देवलोक कॉलोनी, शिवपुरी, हापुड़ में आयोजित कार्यक्रम को सुना। मन की बात कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने अपने देश की जनता से कहा कि सर्वप्रथम हमारा स्वास्थ्य ठीक होना चाहिए यदि हम फिट रहेंगे तो सभी कार्यों में दक्षता आएगी इसी के साथ-साथ उन्होंने राम मंदिर के लोकार्पण के विषय में जनता से चर्चा की प्रधानमंत्री का उद्बोधन सदैव ही हमें समाज में एक नवीन सकारात्मक सोच के साथ बदलाव में भागीदारी के लिए प्रेरित करता है। जिसमें प्रमुख रूप से भाजपा जिलाध्यक्ष नरेश तोमर,जिला पंचायत अध्यक्ष रेखा नागर, क्षेत्रीय सदर विधायक विजयपाल आढती, मंत्री कविता मादरे, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष मालती भारती, जिला महामंत्री पुनीत गोयल एवं सभी वरिष्ठ पदाधिकारी सम्मिलित हुए। कार्यक्रम संयोजिका यशोदा जिला उपाध्याय महिला मोर्चा हापुड रही।

रेलवे ट्रैक पर लेटकर अधेड़ ने की आत्माहत्या

द अचीवर टाइम्स रमेश चन्द्र

लखीमपुर खीर, फरधान। थाना क्षेत्र के अंतर्गत देवकली हाल्ट और फरधान रेलवे स्टेशन के मध्य हलुआपुर गांव के निकट एक अधेड़ का शव क्षत विक्षत रेलवे ट्रैक पर पड़ा देखा गया। स्टेशन मास्टर की सूचना पर मौके पर पुलिस पहुंची और शव की शिनाख्त कराने पर थाना क्षेत्र के गांव खानपुर निवासी संतोष वर्मा के रूप में हुई। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना क्षेत्र के गांव खानपुर निवासी संतोष कुमार वर्मा उर्फ पप्पू आयु 44 वर्ष पुत्र राम स्वरूप रोज की भांति सुबह उठकर भैंस का दूध दुहने बाद घर से बिना बताये बाहर चला गया। बताते है सीधे रेलवे ट्रैक की तरफ पहुंचा गया। उसी डाऊन पैसेंजर डालीगंज से मैलानी को जाने वाली ट्रेन संख्या 05086 के आगे पटरी पर लेटकर आत्म हत्या कर ली। गेटमैन जितेंद्र ने फरधान स्टेशन मास्टर को सूचना दी। सूचना पाकर जीआरपी पुलिस और फरधान पुलिस मौके पर गई। पुलिस आसपास खेत पर काम कर रहे किसानों और ग्रामीणों के माध्यम से शिनाख्त कराने के बाद उसके भाई को सूचना दी। भाई रामनरेश ने बताया कुछ संतोष वर्मा कुछ दिमाग से विक्षिप्त था। अभी एक सप्ताह पहले घर से अचानक कही चला गया था। काफी तलाश के बाद तीसरे दिन मिले थे। इस संबंध में थाना एसओ बृजेश कुमार मौर्या ने बताया कि मृतक के भाई की सूचना पर शव पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया गया है। परिजनों के अनुसार संतोष कुछ मानसिक रूप से परेशान रहता था। जो जांच का विषय है। जांच कर उचित कार्यवाही की जा रही है।

झांसी महोत्सव में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को नहीं मिली जगह

झांसी। किले की तलहटी में चल रहे झांसी महोत्सव में सीडीओ द्वारा दिया गया आवंटन पत्र लेकर दुकान लगाने पहुंचीं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को आयोजकों ने लौटा दिया। आरोप है कि महिलाओं से अभद्रता भी की गई। इससे गुस्साई महिलाओं ने विकास भवन पहुंच कर प्रदर्शन किया। 28 और 29 दिसंबर को विकास भवन परिसर में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के उत्पादों का सरस मेला आयोजित गया था। इसमें महिलाओं ने सदर विधायक रवि शर्मा से किले की तलहटी में चल रहे महोत्सव में दुकानें आवंटित कराने का आग्रह किया था। विधायक ने उनकी मांग पर मुख्य विकास अधिकारी से वार्ता की। इसके बाद मुख्य विकास अधिकारी जुनैद अहमद ने झांसी विकास प्राधिकरण को महिलाओं को दुकानों का आवंटन करने के लिए पत्र लिखा।

शराब पीकर स्टंट बाजी कर हुड़दंग करने वालों के खिलाफ होगी कार्रवाई :एसपी,हापुड

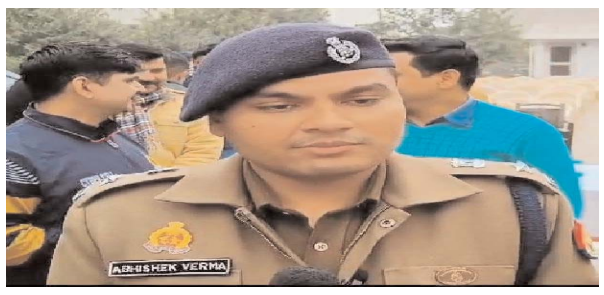

❖ यातायात नियमों का पालन करते हुए बड़े हर्ष उल्लास के साथ बनाए नववर्ष-2024-अभिषेक वर्मा, एसपी हापुड़

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने नववर्ष-2024 के दृष्टिगत सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने हेतु की गई तैयारी एवं जनपदवासियों से की गई अपील करते हुए कहा जो लोग नव वर्ष के उपलक्ष में अपने-अपने घरों से निकलकर खाने पीने व घूमने के साथ साथ शॉपिंग करने आते हैं वे लोग नव वर्ष 2024 बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाये साथी यातायात नियमों का पालन करना सुनिश्चित करें तथा धुंध और कोहर की वजह से सड़क पर धीरे से चले और लोगों की सुरक्षा की दृष्टि रखते हुए जिले में 12 चेक पोस्ट बनाए गए हैं तथा शराब पीकर वाहन चलाने,स्टंट बाज व हुड़दंग करने वाले लोगों के खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

11 महीने में हुए 568 सड़क हादसे, 252 लोगों ने गंवाई जान

झांसी। मंडलायुक्त डॉ. आदर्श सिंह की अध्यक्षता में मंडलीय सड़क सुरक्षा समिति की समीक्षा बैठक शुक्रवार को आयोजित की गई। इसमें सड़क हादसों को रोकने और ब्लैक स्पॉट चिह्नित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में जानकारी दी गई कि जनवरी से नवंबर 2022 के दौरान झांसी जिले में 514 सड़क दुर्घटनाएं हुई थीं। जिसमें 257 मौत व 318 लोग घायल हुए। वहीं, 2023 में इसी अवधि में 568 सड़क दुर्घटनाएं हुई, जिसमें 252 व्यक्तियों की मृत्यु हुई और 317 व्यक्ति घायल हुए। कमिश्नर ने कहा कि हर माह बैठक आयोजित कर सड़क दुर्घटना की समीक्षा करें। बताया गया कि झांसी जिले में कुल 28 ब्लैक स्पॉट हैं, जिनमें आठ ब्लैक स्पॉट लोक निर्माण विभाग के क्षेत्र में हैं और 20 राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के क्षेत्र में चिह्नित किए गए हैं।

लूट की घटना को अंजाम देने वाले पांच लुटेरों को मैगलगंज पुलिस ने किया गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स रमेश चंद्र

लखीमपुर खीरी। थाना मैगलगंज पुलिस व अपराध शाखा की संयुक्त टीम ने लूट की घटना का सफल अनावरण किया। घटना में सम्मलित पांच नफर अभियुक्तों को लूट के ट्रेक्टर-ट्राली व घटना में प्रयुक्त अर्टिगा कार व 02 अवैध तमंचा व 3 अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर बरामद कर गिरफ्तार किया। पांचों आरोपियों को जेल भेज दिया है। पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी, गणेश प्रसाद साहा के निर्देशन व अपर पुलिस अधीक्षक महोदय खीरी के निकट पर्यवेक्षण में संपूर्ण जनपद में अपराध की रोकथाम व वांछित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान में थाना मैगलगंज पुलिस व अपराध शाखा की संयुक्त टीम द्वारा थाना स्थानीय पर वादी मुकदमा अजीत वर्मा पुत्र अनन्द बिहारी वर्मा नि0ग्राम राजापुर थाना मितौली जनपद खीरी की तहरीर के आधार पर मु0अ0सं0 472/2023 धारा 392 भा0द0वि0 पंजीकृतह्व किया गया था विवेचना के दौरान विवेचना प्रकाश में आये 07 नफर वांछित अभियुक्तगणों में से 05 नफर वांछित अभियुक्तों 1. सूफियान पुत्र जलालुद्दीन निवासी गजपतिपुर थाना महोली जनपद सीतापुर, 2.दोस्त मोहम्मद पुत्र सत्तार, 3. नवशाद पुत्र सत्तार, 4.असद पुत्र समसेर निवासीगण ग्राम गद्दीपुर थाना इमलिया सुल्तानपुर जनपद सीतापुर को लिधियाई मोड वहद कस्बा मैगलगंज से गिरफ्तार किया है

अक्षत कलश यात्रा, बड़ी संख्या में सर्व समाज के लोग शामिल जगह-जगह किया गया भव्य स्वागत

निर्मल सैनी द अचीवर टाइम्स

लखनऊ। अयोध्या में नव निर्मित भगवान श्री राम के भव्य मंदिर में 22 जनवरी को श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होगी। इसमें शामिल होने के लिए गांव-शहर जाकर धर्म प्रेमी लोगों को पीला चावल वितरित किया जा रहा है। इसी कड़ी में अयोध्या धाम से आए पूजित अक्षत कलश शोभायात्रा माल प्रखंड में बजरंग दल जिला संयोजक सुशील कुमार के नेतृत्व में निकाली गई। आपको बता दें कि विश्व हिंदू परिषद बजरंग दल द्वारा माल प्रखंड के अंतर्गत शिव धाम भट्टा चौराहा से प्रारंभ होकर आस पास के दर्जनों गांव होते हुए फिर शिव धाम भट्टा चौराहे पर समापन हुआ।क्षेत्र में अक्षत कलश के अभिनंदन में भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। श्री राम जन्म भूमि तीर्थ ट्रस्ट द्वारा राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में आमंत्रण के लिए भेजे गए अक्षत के पूजन में मानों माल प्रखंड उमड़ पड़ा हो। मुख्य मार्गो पर सभी वर्गो से जुड़े समाज ने जोरदार स्वागत किया ।जयकारे चहुंओर गूंज रहे थे। लोगों ने अक्षत कलश की आरती एवम पुष्प वर्षा करके वंदन किया।इस मौके पर श्रवण कुमार, अभिमन्यु, बाबा त्रिभुवन नाथ, श्याम जी, राजकुमार, अंकित, विमलेश, विशाल, राजा यादव, आलोक गुप्ता, विपिन पाल राहुल शर्मा, सरोज चौरसिया, रामदीन, हर्षित, छोटू, टिंकू यादव, विपिन यादव जितेंद्र यादव रामनरेश यादव, पंकज अर्कवन्सी, देशराज, दुर्गावाहिनी रुचि पाल, लक्ष्मी किरण सहित सैकड़ों की संख्या में लोग शामिल हुए।

भोले-भाले लोगों के धोखाधड़ी से बैंक खातों से धनराशि निकालने वाले अन्तर्राज्यीय गिरोह की एक महिला सहित 2 साइबर अपराधी गिरफ्तार

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। जनपदीय साइबर सेल टीम ने क्रेडिट कार्ड की गोपनीय जानकारी धोखाधड़ी से प्राप्त कर बैंक का अधिकारी बनकर कॉल करके भोले-भाले लोगों कै बैंक खातों से धनराशि की निकासी करने वाले अन्तर्राज्यीय गिरोह का पर्दाफाश करते हुए एक महिला मीनाक्षी व रोशन निवासी थाना राजेंद्र पार्क ग्राम गुरुग्राम सहित तो साइबर अपराधीयों को सौभा सिटी सेक्टर 106 के टावर 1 के पीछे से गिरफ्तार किया है। जिनके कब्जे से 4 मोबाइल फोन, एक आई 20 कार, नकदी आदि बरामद।? पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने प्रेस वार्ता करते हुए बताया कि अभियुक्तगण शातिर किस्म के साइबर अपराधी हैं जो बैंक का अधिकारी बनकर भोले वाले लोगों को कॉल कर क्रेडिट कार्ड की गोपन जानकारी प्राप्त कर क्रेडिट कार्ड के पीछे लिखा टोल फ्री नंबर को ईनडे कॉल ऐप के माध्यम से क्रेडिट कार्ड की गोपनीय जानकारी कर धोखे से बैंक खातों से धनराशि की निकासी कर लेते थे। जो वर्ष-2021 से देश के विभिन्न राज्यों में साइबर अपराध की घटनाओं को अंजाम दे रहे हैं जिनके द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में हजारों लोगों के साथ ऐसी घटनाएं कारित कर लाखों रूपये का आर्थिक लाभ कमाया जा चुका है तथा धोखाधड़ी से निकल गई धनराशि को यह लोग आपस में बांट लेते थे दोनों अभियुक्तगण के खातों में करीब 14-15 लाख रूपये की ट्रांजेक्शन का होना पाया गया है।

नए साल के जश्न के लिए बदला शहर का ट्रैफिक

❖ आज दोपहर से होगा लागू, ये होंगे पार्किंग और नो पार्किंग जोन।

संवाददाता

लखनऊ। शराब पीकर गाड़ी चलाने और उत्पात मचाने वालों पर नकेल कसी जाएगी। इस संबंध में शनिवार को ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर कानून-व्यवस्था उपेंद्र अग्रवाल ने दिशा-निर्देश जारी किए। नए साल के स्वागत जश्न के मौके पर पुलिस की सुरक्षा और यातायात व्यवस्था चाक-चौबंद रहेगी। 14 स्थानों पर डायवर्जन रहेगा। बदलाव रविवार दोपहर तीन बजे से लेकर जश्न की समाप्ति तक लागू रहेगा। शहरवासी बेफिक्र होकर नए साल का जश्न मनाएं। बस शराब पीकर गाड़ी चलाने और उत्पात मचाने वालों पर नकेल कसी जाएगी। इस संबंध में शनिवार को ज्वाइंट पुलिस कमिश्नर कानून-व्यवस्था उपेंद्र अग्रवाल ने दिशा-निर्देश जारी किए। कार्यक्रम के दौरान वैकल्पिक मार्ग के अभाव में प्रतिबंधित मार्ग पर भी एंबुलेंस, फायर सर्विस, शव वाहन, स्कूली वाहन आदि को ट्रैफिक व स्थानीय पुलिस निकलवाएगी। इसके लिए **ट्रैफिक कंट्रोल नंबर-9454405155** पर संपर्क किया जा सकता है।

महानगर,गोमतीनगर, यूपीटेक चौराहे की ओर से आने वाला यातायात सिकंदरबाग चौराहे से सहारागंज मॉल व चिरैयाझील तिराहे की ओर नहीं जा सकेगा। यह यातायात सफ्रू मार्ग तिराहे से दाएं डनलप तिराहा, सहारागंज तिराहा होते हुए सहारागंज मॉल पार्किंग तक जा सकेगा। सहारागंज तिराहे से कोई भी यातायात डनलप तिराहे, पुलिस आयुक्त आवास, सफ्रू मार्ग तिराहे की ओर नहीं जा सकेगा। यह यातायात सिकंदरबाग चौराहे से दाहिने मुड़कर सफ्रू मार्ग होते हुए अपने गंतव्य को जा सकेगा। डनलप तिराहा, पुलिस आयुक्त आवास से कोई भी यातायात सेंट फ्रांसिस, बैंक ऑफ इंडिया या अल्का तिराहे की ओर नहीं जा सकेगा। यह यातायात सहारागंज या सफ्रू मार्ग होकर अपने गंतव्य को जाएगा।

-हजरतगंज चौराहे से कोई भी यातायात अल्का तिराहा या मेफेयर तिराहा होते हुए परिवर्तन चौक या सुभाष चौराहा की तरफ नहीं जा सकेगा। यह यातायात सफ्रू मार्ग तिराहा से बाएं डनलप तिराहा, सहारागंज तिराहा से बाएं चिरैयाझील तिराहा, संकल्प वाटिका होकर अपने गंतव्य को जा सकेगा।

- चारबाग से हजरतगंज चौराहा होते हुए परिवर्तन चौक की तरफ यातायात नहीं जा सकेगा। यह यातायात हुसैनगंज चौराहे से बाएं ओडियन सिनेमा कैसरबाग होकर अपने गंतव्य को जा सकेगा।

-अलीगंज, महानगर, कैसरबाग से परिवर्तन चौक होकर आने वाला कोई भी यातायात हिंदी संस्थान तिराहे के आगे मेफेयर तिराहे व हजरतगंज चौराहे की ओर नहीं जा सकेगा। यह यातायात स्टेडियम तिराहे से बाएं मुड़कर चिरैयाझील तिराहा, संकल्प वाटिका, सिकंदरबाग या परिवर्तन चौक, सफेद बारादरी से कैसरबाग होकर अपने गंतव्य को जा सकेगा।

लालबाग की ओर से वाल्मीकि तिराहे की ओर आने वाले वाहन वाल्मीकि तिराहे से दाहिने नहीं जा सकेंगे। यह यातायात वाल्मीकि तिराहे से बाएं डीएम आवास, प्रेस क्लब, परिवर्तन चौक से होते हुए अपने गंतव्य जा सकेगा।

नवल किशोर रोड, लीला टाकीज तिराहे से कोई भी यातायात बैंक ऑफ इंडिया तिराहे की ओर नहीं जा सकेगा। यह यातायात आयकर भवन तिराहा या सेंट लॉरेंस कॉलोनी होकर अपने गंतव्य की ओर जा सकेगा।

लालबाग चौराहे से कोई भी यातायात मेफेयर या अल्का तिराहे की ओर नहीं जा सकेगा। यह यातायात कैंपर रोड या कैपिटल तिराहा होकर अपने गंतव्य को जाएगा।

अब्दुल हमीद चौराहे से एमबी क्लब, नेहरू चौराहा से होकर सामान्य यातायात नहीं जा सकेगा। यह यातायात अटल रोड से गुरुद्वारा चौराहा कैंट होकर अपने गंतव्य को जा सकेगा।

महानगर की तरफ से आने वाली रोडवेज व सिटी बसें सिकंदरबाग चौराहा, हजरतगंज चौराहा की ओर नहीं जा सकेंगी। ये बसें संकल्प वाटिका तिराहे से बैकुंठधाम तिराहा, गांधी सेतु (1090) चौराहा, गोल्फ क्लब चौराहा, बंदरियाबाग चौराहा होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगी।

-अयोध्या रोड की तरफ से कैसरबाग बस अड्डा आने-जाने वालीं रोडवेज बसें सिकंदरबाग चौराहा, हजरतगंज चौराहा की ओर नहीं जा सकेंगी। ये बसें बालू अड्डा तिराहे से दाहिने बैकुंठधाम तिराहे से बाएं संकल्प वाटिका ओवरब्रिज, लक्ष्मण मेला बंधा, चिरैयाझील चौराहे से दाहिने, मोतीमहल तिराहे से बाएं, केडी सिंह बाबू स्टेडियम तिराहे से दाएं होते हुए परिवर्तन चौक, सुभाष चौराहा, क्लार्क अवध तिराहा, सीडीआरआई तिराहा होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगी।

-कमता की तरफ से आने वाली सिटी बसें गांधी सेतु (1090) चौराहा से सिकंदरबाग चौराहा, हजरतगंज चौराहा की ओर नहीं जा सकेंगी। ये बसें गांधी सेतु (1090) चौराहे से सीधे गोल्फ क्लब चौराहा, बंदरियाबाग चौराहा होकर अपने गंतव्य को जा सकेंगी।

चारबाग की तरफ से हजरतगंज की ओर आने वाली रोडवेज और सिटी बसें केकेसी तिराहा से कुंवर जगदीश चौराहा, कैंट होकर या हुसैनगंज चौराहा से कैसरबाग या रॉयल होटल (बापू भवन) चौराहा से डीएसओ चौराहा होते हुए अपने गंतव्य को जा सकेंगी।

हजरतगंज चौराहे से अल्का तिराहा, मेफेयर तिराहा, लालबाग चौराहा, हलवासिया, हिंदी संस्थान तिराहे तक व अल्का तिराहे से बैंक ऑफ इंडिया और डनलप तिराहे तक।

सफ्रू मार्ग तिराहे से डनलप तिराहे तक व डनलप तिराहे से सहारागंज तिराहे तक।

सिकंदरबाग चौराहे से चिरैयाझील तिराहे तक (राणा प्रताप मार्ग पर)।

गोल्फ क्लब चौराहे से लालबत्ती चौराहे तक।

लालबत्ती चौराहे से लाल बहादुर शास्त्री तिराहा, सिसेंडी तिराहा से रॉयल होटल चौराहे तक।

हजरतगंज चौराहे से बर्लिंग्टन चौराहे तक।

मल्टीलेवल पार्किंग हजरतगंज-तेलीबाग, कैंट, गोमतीनगर से हजरतगंज में कार्यक्रम में आने वालों के वाहन हजरतगंज चौराहे से मल्टीलेवल प्रवेश द्वार से दाहिने मुड़कर मल्टीलेवल पार्किंग में पार्क होंगे। वापसी में नवल किशोर स्थित निकासी द्वार से अपने गंतव्य को जा सकेंगे।

मल्टीलेवल पार्किंग झंडे वाला पार्क, नगर निगम कार्यालय के सामने- अमीनाबाद, कैसरबाग, चारबाग, राजाजीपुरम से हजरतगंज में कार्यक्रम में आने वालों के वाहन कैपिटल तिराहा या लालबाग होकर इस पार्किंग में पार्क होंगे।

मल्टीलेवल पार्किंग सरोजनी नायडू पार्क डीएम आवास के सामने-अलीगंज व चौक से हजरतगंज कार्यक्रम में आने वाले वाहन सरोजनी नायडू पार्क मल्टीलेवल पार्किंग में पार्क होंगे।

सहारागंज मॉल पार्किंग-सहारागंज मॉल में आने वालों के वाहन सफ्रू मार्ग या चिरैयाझील होकर ही पार्किंग में जा सकेंगे।

ये मार्ग रहेंगे वन-वे

पार्क रोड से हजरतगंज की तरफ।

नवल किशोर रोड से बैंक ऑफ इंडिया की तरफ।

सहारागंज तिराहे से डनलप तिराहे की ओर।

सिकंदरबाग चौराहे से सहारागंज तिराहे की ओर।

डनलप तिराहे से अल्का की तरफ यातायात का जाना प्रतिबंधित रहेगा।

पुलिस की 130 टीमें लगातार गश्त करेंगी

हजरतगंज, समतामूलक, घंटाघर से बड़ा इमामबाड़ा आदि जगहों पर स्ट्रीट वेंडरों को पीछे हटकर दुकान लगाने के निर्देश दिए गए हैं।

मॉल, रेस्टोरेंट आदि को पार्किंग की व्यवस्था खुद करनी होगी।

एक नज़र

मैनेजमेंट गुरू नवीन ने बताए आर्थिक विकास के सूत्र, कको 1 ट्रिलियन इकोनॉमी बनाने का लक्ष्य

लखनऊ। नवीन ने इस बैठक में ऑनलाइन प्रतिभाग करते हुए बैठक में प्रतिभाग कर रहे सभी उद्यमियों और व्यापारियों को स्ट्रेटेजी मैनेजमेंट के ÷पोर्टर के पाँच फ़र्सेज़÷ कॉन्सेप्ट के बारे में बताया। जिला स्तरीय व्यापार बन्धु समिति लखनऊ की बैठक जिलाधिकारी लखनऊ श्री सूर्य पाल गंगवार द्वारा कलेक्ट्रेट स्थित अब्दुल कलाम सभागार में समन्वय बैठक आहूत की गई जिसमें सभी विभागीय अधिकारियों व उपायुक्त (प्रशासन) राज्य कर एवं अन्य अधिकारियों कि साथ-साथ नगर क्षेत्र लखनऊ के समस्त व्यापार मण्डल के पदाधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रदेश को एक ट्रिलियन डॉलर इकॉनमी बनाने के लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए इस बैठक में ज़िलाधिकारी के अभिनव पहल के अन्तर्गत लखनऊ ज़िला के उद्यमियों और व्यापारियों को मैनेजमेंट से संबंधित जानकारी साझा करने और देश-दुनिया में उद्योगों क्षेत्र के विभिन्न अध्ययनों व शोधों पर चर्चा करने के लिए आईआईएम इन्दौर के मैनेजर और मैनेजमेंट गुरु नवीन कृष्ण राय को आमंत्रित किया गया था। नवीन ने इस बैठक में ऑनलाइन प्रतिभाग करते हुए बैठक में प्रतिभाग कर रहे सभी उद्यमियों और व्यापारियों को स्ट्रेटेजी मैनेजमेंट के ÷पोर्टर के पाँच फ़र्सेज़÷ कॉन्सेप्ट के बारे में बताया। यह कॉन्सेप्ट दरअसल किसी भी इंडस्ट्री के मज़बूत और कमजोर पक्षों को पता करने के लिए उपयोग किया जाता है।इस मॉडल की मदद से किसी भी इंडस्ट्री के कॉर्पोरेट स्ट्रैटेजी को बेहतर तरीक़े से बनाया जा सकता है। इसके अलावा उन्होंने फर्दोस और डी मेयर द्वारा दिये गये 'सैंडकोन' मॉडल ऑफ ऑपरेशंस एक्सीलेंस के बारे में भी बात किया। इसकी मदद से उन्होंने बताया कि किसी भी उद्योगिक यूनिट के अन्तर्गत आने वाले कुछ ऑपरेशनल क्षमताएं एक दूसरे की मदद करते हैं, जो एक संचयी तरीके से ऑपरेशंस एक्सीलेंस प्राप्त करने के रास्ते को आसान बनाते हैं। इसके माध्यम से उन्होंने बताया कि ऑपरेशनल क्षमताओं को विकसित करने के लिए एक आदर्श क्रम होता है। उन्होंने बताया कि किसी भी उद्योग को सबसे ज़्यादा प्राथमिकता अपने उत्पाद की क्वालिटी को बेहतर करने को देना चाहिए। उसके बाद की प्राथमिकताओं के क्रम में उद्योग की डिपेंडबिलिटी सुनिश्चित करना, फ्लेक्सिबिलिटी बढ़ाना और उत्पादन की गति को तेज करना होनी चाहिए। जबकि उत्पादन लागत को कम करने को सबसे कम प्राथमिकता देनी चाहिए। उन्होंने यह भी बताया प्राथमिकता के इन सभी बिंदुओं पर एक साथ कार्य किया जाना चाहिए अर्थात् कि कम प्राथमिकता वाले बिंदुओं पर कार्य करने के दौरान अधिक प्राथमिकता वाले बिंदुओं को बेहतर करने पर समानांतर कार्य करते रहना चाहिए। बैठक में जिला विकास अधिकारी, उपायुक्त उद्योग, नगर निगम, विद्युत विभाग, एलडीए, तथा उद्योग से सम्बन्धित अन्य विभागों के प्रतिनिधि एवं विभिन्न औद्योगिक व व्यापारिक संगठनों के पदाधिकारी एवं उद्यमीगण व व्यापारीगण उपस्थित रहे।

रोडवेज की चार हजार बसों में लगे पैनिक बटन, 20 जनवरी से मिलेगा सुविधा, प्रेस करते ही आएगी पुलिस

लखनऊ। परिवहन निगम अधिकारियों ने बताया कि निर्भया फंड से लगाए गए पैनिक बटनों से महिलाओं को बस में असुविधा होने पर तत्काल मदद मिलेगी। प्रत्येक बस में दस बटन लगाए गए हैं। जरूरत होने पर बटन दबते ही तत्काल सेंट्रलाइज्ड कमांड सेंटर व डायल 112 पर सूचना चली जाएगी। बसों में सफर करना और भी सुरक्षित हो गया है। एक बटन दबाने पर तत्काल पुलिस मदद के लिए पहुंच जाएगी। कुल चार हजार रोडवेज बसों में पैनिक बटन लगा दिए गए हैं। 20 जनवरी को इस सुविधा को लॉन्च करने की तैयारी है। अगले चरण में तीन हजार अनुबंधित बसों में भी पैनिक बटन लगाए जाएंगे। वर्ष 2012 में निर्भया कांड के बाद बनाए गए निर्भया फंड की मदद से परिवहन निगम प्रशासन ने बसों की सुरक्षा को पुख्ता बनाने की योजना तैयार की। कुल 71 करोड़ रुपये के बजट से बसों में पैनिक बटन लगाने की योजना को अमलीजामा पहनाया। जापानी की कंपनी को पैनिक बटन लगाने की जिम्मेदारी सौंपी गई। कंपनी ने रोडवेज की चार हजार बसों में पैनिक बटन लगा दिए हैं। जबकि पांच हजार बसों में इन बटनों को लगाया जाना है। शेष बसों में बीस जनवरी से पहले बटन लगा दिए जाएंगे। सूत्रों की मानें तो बीस जनवरी को भव्य समारोह कर इस सुविधा को जनहित में लॉन्च कर दिया जाएगा। इससे महिलाओं, बुजुर्गों व पीड़ितों को आसानी से मदद मिल सकेगी। इसके लिए परिवहन निगम मुख्यालय पर सेंट्रलाइज्ड कमांड रूम बनाया गया है। जबकि निगम के बीस परिक्षेत्रों में रीजनल कंट्रोल रूम बनाए गए हैं, जहां क्षेत्रीय स्तर पर यात्रियों को मदद मुहैया कराई जा सकेगी।

हर बस में लगे दस बटन, 112 से होंगे कनेक्ट

परिवहन निगम अधिकारियों ने बताया कि निर्भया फंड से लगाए गए पैनिक बटनों से महिलाओं को बस में असुविधा होने पर तत्काल मदद मिलेगी। प्रत्येक बस में दस बटन लगाए गए हैं। जरूरत होने पर बटन दबते ही तत्काल सेंट्रलाइज्ड कमांड सेंटर व डायल 112 पर सूचना चली जाएगी, जिसके बाद मौके पर पुलिस पहुंचेगी और पीड़ित की मदद करेगी।

लखनऊ, प्रयागराज के मिलेट्स व काशी तमिल संगमम की विशेष चर्चा

संवाददाता

लखनऊ। पीएम मोदी ने 22 जनवरी 2024 को होने जा रहे रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पहले युवाओं से अपील की कि सोशल मीडिया को राममय किया जाना चाहिए। पीएम ने भगवान राम को समर्पित गीतों को इसका एक बेहतरीन जरिया बताते हुए अपील की कि #ShriRamBhajan टैग के जरिए प्रभु श्रीराम के भजनों को सोशल मीडिया पर शेयर किया जाए। बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष जगत प्रकाश नड्डा के साथ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मन की बात के 108वें संस्करण को सुना। ट्रांसपोर्ट नगर स्थित एक होटल में मन की बात का सजीव प्रसारण किया गया। प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में 2023 की उपलब्धियों की चर्चा की। वहीं उन्होंने अंतरराष्ट्रीय मिलेट्स वर्ष में विशेष रूप से उत्तर प्रदेश के स्टार्टअप्स की चर्चा करते हुए इसे लाइफस्टाइल हेल्थ इनोवेशन की दिशा में बड़ा कदम बताया।

लाइफस्टाइल डिसीज पर विशेष रूप से चर्चा करते हुए पीएम ने फिट इंडिया मूवमेंट की भी चर्चा की। वहीं इंटरनेशनल इयर ऑफ मिलेट्स में लखनऊ के किरोज फूड्स, प्रयागराज के ग्रैंड माम्लेट्स और न्यूट्रास्युटिकल्स जैसे कई स्टार्टप्स की तारीफ भी की। प्रधानमंत्री ने हाल ही में काशी तमिल संगमम के दौरान एआई तकनीक की मदद से हुए उनके रियल टाइम हिन्दी और तमिल संबोधन को भी क्रांतिकारी बताया। उन्होंने उम्मीद जताई कि काशी तमिल संगमम में हुए इस इनोवेशन से आने वाले समय में स्कूलों, अस्पतालों और न्यायालयों में बहुभाषीय संवाद कायम करने में बहुत मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री ने इसके अलावा नारी शक्ति वंदन अधिनियम, भारत का विश्व की पांचवी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना, जी-20 की सफलता, दीपावाली पर रिकॉर्ड कारोबार, वोकल फॉर लोकल, चंद्रयान-3 की सफलता। ऑस्कर में नाटू नाटू और एलिफेंट व्हिस्पर्स को मिले पुरस्कार, अंतरराष्ट्रीय खेलों में खिलाड़ियों की उपलब्धियों, क्रिकेट वर्ल्ड कप में भारत के शानदार प्रदर्शन की भी चर्चा की। पीएम ने आजादी का अमृत महोत्सव, मेरी माटी मेरा देश, 70 हजार अमृत सरोवरों के निर्माण को सामूहिक उपलब्धि बताया। पीएम ने कहा कि हमें 2023 की उपलब्धियों से प्रेरणा लेकर नये संकल्पों को लेना होगा। प्रधानमंत्री ने मेंटल हेल्थ को लेकर भी मन की बात में विशेष चर्चा की और आने वाले समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिए इसमें बड़े बदलावों की उम्मीद जताई। लखनऊ के प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम के दौरान प्रदेश के डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक, वित्त मंत्री सुरेश खन्ना, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी, पूर्व डिप्टी सीएम एवं राज्यसभा सदस्य दिनेश शर्मा, विधानपरिषद सदस्य मोहसिन रजा सहित तमाम गणमान्य मौजूद रहे।

श्रीराम मंदिर, मुख्यमंत्री योगी और एसटीएफ चीफ को बम से उड़ाने की धमकी

संवाददाता

लखनऊ। भारतीय किसान मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी ने यूपी-112 को जानकारी दी। देवेंद्र को जुबेर खान नाम के शख्स की आईडी से धमकी भरा ईमेल भेजा गया। जुबेर ने खुद को आईएसआई संगठन से जुड़े होने का दावा किया है। श्रीराम मंदिर, सीएम योगी और एसटीएफ चीफ को बम से उड़ाने की धमकी दी गई। धमका भरा ई-मेल भारतीय किसान मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी को भेजो गया। देवेंद्र को भी मारने की धमकी दी गई है। ई-मेल भेजने वाले ने खुद को आईएसआई से जुड़ा बताया है। यूपी-112 के इंस्पेक्टर की तहरीर पर सुशांत गोल्फ सिटी थाने में एफआईआर दर्ज की गई है। पुलिस के साथ एटीएस वको प्रकरण की जांच में लगाया गया है। ई-मेल करने वाले ट्रेस किया जा रहा है। एफआईआर यूपी-112 में तैनात इंस्पेक्टर सहेंद्र कुमार ने दर्ज कराया है। एफआईआर के मुताबिक देवेंद्र तिवारी ने यूपी-112 को एक शिकायत ट्विटर पर टैग की। जिसमें बताया गया कि आईएसआई जुबेर खान की तरफ से उनको 27 दिसंबर की शाम 7 बजकर 37 मिनट पर एक ई-मेल भेजा गया। जिसमें लिखा गया कि सीएम योगी, एसटीएफ चीफ अमिताभ यश ने जीना हराम कर रखा है। तुम भी (देवेंद्र तिवारी) बहुत गो सेवक बने हो। इसलिए सभी को बम से उड़ा दिया जाएगा। अयोध्या श्रीराम मंदिर को भी उड़ाएंगे। इसकी जिम्मेदारी आईएसआई ले रहा है।

लखनऊ में महिला हॉफ मैराथन

पीएम के विजन को शत प्रतिशत धरातल पर उतार रहे सीएम योगी: जेपी नड्डा

संवाददाता

लखनऊ। जेपी नड्डा ने कांग्रेस और सपा पर हमला बोलते हुए कहा कि जो राजनीतिक दल सिर्फ अपने परिवार के विकास की बात कर रहे थे। उनको अब न्याय यात्रा की याद आई है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी और अखिलेश यादव अब परिवार की बात करने की बजाय देश की जनता की बात करने लगे हैं।

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने रविवार को दुबग्गा में आयोजित महिला हॉफ मैराथन के उद्घाटन समारोह को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के मिशन को मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ शत प्रतिशत धरातल पर उतारने का काम कर रहे हैं। सीएम योगी के नेतृत्व में यूपी आज बीमारू प्रदेश की पहचान से बाहर निकलकर देश के अग्रणी राज्यों की कतार में शामिल हो गया है। उन्होंने कहा आज देश को आगे ले जाने वालों और पीछे खींचने वालों में एक बड़ी स्पर्धा चल रही है।

बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि एक तरफ प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ भारत और उत्तर प्रदेश को आगे ले जा रहे हैं तो वहीं राहुल गांधी और अखिलेश यादव केवल अपने परिवार को आबाद रखना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि महिला सशक्तिकरण को लेकर आयोजित हॉफ मैराथन के इस कार्यक्रम में शामिल होना उनके लिए सौभाग्य की बात है। जेपी नड्डा ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी देश में केवल चार जातियों के बारे में बात करते हैं, जिनमें सबसे पहले महिला, दूसरी युवा, तीसरी किसान और चौथी जाती है गरीबों की। यदि हम इन चार जातियों को मजबूत करके उन्हें ताकत देते हैं तो विकसित भारत बनने से हमें कोई रोक नहीं सकता।

जेपी नड्डा ने महिला, किसान, युवा और गरीबों के लिए संचालित विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की चर्चा करते हुए कहा कि इन्हें जमीन पर अक्षरशः उतारने का कार्य योगी आदित्यनाथ की सरकार ने बखूबी किया है। यही कारण है कि आज करोड़ों लोग गरीबी रेखा से ऊपर उठकर बीपीएल से एपीएल श्रेणी में शामिल हो चुके हैं। उन्होंने फिट इंडिया और खेलो इंडिया मूवमेंट की चर्चा करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की इस बात के लिए भी तारीफ की कि प्रदेश के हर जिले में सर्वसुविधायुक्त स्टेडियम से लेकर गांव गांव में खेल के मैदान और ओपेन जिम बनाए जा रहे हैं।

बीजेपी राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि यूपी आज विकास की नई गाथा लिख रहा है। चाहे महिला सशक्तिकरण की बात हो, माफिया राज और भ्रष्टाचार का अंत हो या इन्फ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट, इन सभी उपलब्धियों के लिए योगी आदित्यनाथ बधाई के पात्र हैं। जेपी नड्डा ने विपक्ष को देश को पीछे खींचने वाली ताकत बताया और कहा कि आज देश को आगे ले जाने वालों और पीछे खींचने वालों के बीच स्पर्धा चल रही है, जहां इंडी अलायंस मोदी को रोको-रोको की रट लगाए है, वहीं हमारी स्पर्धा है कि मोदी जी के नेतृत्व में भारत को आगे ले जाएं। जिन लोगों ने भारत को तोड़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी आज वो भारत जोड़ो यात्रा निकाल रहे हैं, जिन्होंने अन्याय ही अन्याय किया वो न्याय यात्रा निकाल रहे हैं। जो परिवार से बाहर किसी की कल्पना नहीं करते थे वो अचानक देश की बात कर रहे हैं। जेपी नड्डा ने कहा कि मोदी और योगी के नेतृत्व में आगामी लोकसभा चुनाव में यूपी में पूरी की पूरी सीट लेकर आएंगे। कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ, बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह चौधरी, डिप्टी सीएम ब्रिजेश पाठक, केंद्रीय मंत्री कौशल किशोर, राज्यसभा सदस्य दिनेश शर्मा, अशोक वाजपेयी, प्रदेश सरकार में मंत्री सुरेश खन्ना, गिरीश चंद्र यादव, संगठन मंत्री धर्मपाल, विधायकगण सहित अन्य गणमान्य मौजूद रहे।

बेसिक विद्यालय में कई साल से पदोन्नति व परस्पर तबादले का इंतजार कर रहे शिक्षकों को मिली राहत

संवाददाता

लखनऊ। यूपी सरकार ने बेसिक विद्यालय में कई साल से पदोन्नति व परस्पर तबादले का इंतजार कर रहे शिक्षकों को बड़ी राहत दी है। सरकार के इस आदेश से शिक्षकों को अपने घर या पास के जिले में आने का मौका मिलेगा।

बेसिक विद्यालय में कई साल से पदोन्नति व परस्पर तबादले का इंतजार कर रहे शिक्षकों को बड़ी राहत मिली है। सरकार ने पदोन्नति और जिले के अंदर व एक से दूसरे जिले में परस्पर तबादले का आदेश जारी कर दिया है। पदोन्नति में लगभग 5000, जिले के अंदर परस्पर तबादले में 20 हजार और, एक से दूसरे जिले के तबादले में 2000 शिक्षको को इसका लाभ मिलेगा। इससे शिक्षकों को अपने घर में या जिले के पास आने का लाभ मिलेगा। हालांकि पहले पदोन्नति होने से कुछ शिक्षकों के पेयर टूटने की भी संभावना है। यही वजह है कि शिक्षक पहले परस्पर तबादले और बाद में पदोन्नति करने की मांग कर रहे थे, लेकिन विभाग ने पहले पदोन्नति और फिर परस्पर तबादले का आदेश जारी किया है। पदोन्नति की प्रक्रिया छह जनवरी से शुरू होगी। परस्पर तबादले की रिलीविंग और ज्वाइनिंग 11 से 13 जनवरी के बीच होगी। 15 जनवरी से जाड़े की छुट्टी के बाद विद्यालय खुलेंगे।

अधिवक्ता पर चाकू से हमला

लखनऊ। बख्शी का तालाब में इंदौराबाग मोड़ के पास ठेला लगाने के विवाद में ठेले वाले ने अधिवक्ता पर चाकू से हमला कर दिया। इस दौरान खौलते तेल की कड़ाही भी उन पर गिर गई और वह झुलस गए। दोनों पक्षों ने बीकेटी थाने में केस दर्ज कराया है। मड़ियांव के नौबस्ता निवासी अधिवक्ता आकाश तिवारी इंदौराबाग मोड़ पर जमीन किराए पर लेकर फास्ट फूड का काउंटर लगवाते हैं। उनके काउंटर के सामने ही कई लोग ठेला लगाते हैं। आकाश का आरोप है ठेला लगाने वाले राम सिंह ने बृहस्पतिवार को उनके कर्मचारियों से गालीगलौज की थी। शाम को जब वह वहां पहुंचे और राम सिंह से इस बारे में बात की तो वह भड़क गया। पिटाई करने के बाद चाकू से हमला कर दिया। मारपीट के दौरान ही खौलते तेल की कड़ाही आकाश पर गिर गई और वह झुलस गए। मामले में अधिवक्ता आकाश तिवारी ने राम सिंह के खिलाफ केस दर्ज कराया है।

बेसिक स्कूलों का कैलेंडर जारी अब पितृ विसर्जन की छुट्टी ले सकेंगे शिक्षक बसंत पंचमी का अवकाश कटा

संवाददाता

लखनऊ। साल 2023 में गणतंत्र दिवस-बसंत पंचमी एक ही दिन पड़ी थी। जबकि 2022 और 2021 में इसकी छुट्टी कैलेंडर में शामिल थी। वहीं माध्यमिक शिक्षा विभाग ने भी इसे अपनी छुट्टियों में शामिल किया है। प्रदेश में बेसिक शिक्षा परिषद के तहत संचालित विद्यालयों/ मान्यता प्राप्त विद्यालयों के शिक्षक-शिक्षिकाएं अब पितृ विसर्जन की भी छुट्टी ले सकेंगे। वहीं पूर्व के वर्षों में बसंत पंचमी का भी अवकाश होता था, लेकिन इस साल छुट्टियों में इसे शामिल नहीं किया गया है। शासन ने शनिवार को नए साल 2024 की छुट्टियों का कैलेंडर जारी किया है। इसके अनुसार इस साल भी विद्यालयों में 32 दिन की छुट्टी स्कूलों के लिए निर्धारित की गई है। इसके अतिरिक्त महिला शिक्षिकाओं को हरि तालिका तीज या हरियाली तीज, करवा चौथ, संकठा चतुर्थी व हलषष्ठी/ ललई छठ, जिउतिया व्रत/ अहोई अष्टमी का अवकाश देय होगा। नए साल में पितृ विसर्जन का भी अवकाश शिक्षक-शिक्षिकाओं को देय होगा। हालांकि बसंत पंचमी का अवकाश नए साल की छुट्टियों के कैलेंडर में नहीं है। साल 2023 में गणतंत्र दिवस-बसंत पंचमी एक ही दिन पड़ी थी। जबकि 2022 और 2021 में इसकी छुट्टी कैलेंडर में शामिल थी। वहीं माध्यमिक शिक्षा विभाग ने भी इसे अपनी छुट्टियों में शामिल किया है। बेसिक विद्यालयों में गर्मी की छुट्टियां 20 मई से 15 जून और जाड़े की 31 दिसंबर से 14 जनवरी तक निर्धारित की गई है। स्कूलों का समय भी पूर्व की भांति रखा गया है। बेसिक शिक्षा परिषद के सचिव प्रताप सिंह बघेल ने कहा कि चूंकि सरकारी छुट्टियों में बसंत पंचमी का अवकाश नहीं था, इसलिए इसे कैलेंडर में नहीं शामिल किया गया है।

सम्पादकीय

छह देशों में चुनाव होंगे, डीपफेक की बारिश होगी

चुनावी धोखाधड़ी, कॉरपोरेट ब्लैकमेलिंग, बाजारों को अपने हितों के अनुरूप चालित करने और डीपफेक के कारण साइबर सुरक्षा से जुड़े खतरे के मामले वर्ष 2024 में बढ़ेंगे। ऐसे में, यह चर्चा, चिंता और लड़ाई सतत बनी रहेगी कि कोई लिखित सामग्री, कोई तस्वीर, कोई ऑडियो क्लिप या कोई वीडियो असली है या फर्जी। डीपफेक 2024 में बड़ी समस्या बनने वाला है। दरअसल डीपफेक तैयार करने के लिए जिस तकनीक की जरूरत पड़ती है, वह आज न सिर्फ पहले की तुलना में आसानी से उपलब्ध है, बल्कि कम लागत या कीमत में भी उपलब्ध है। इसके लिए जेनरेटिव एआई या कृत्रिम मेधा का इस्तेमाल किया जाता है। जेनरेटिव एआई के जरिये किसी भी शैली और किसी भी भाषा में ई-मेल लिखे जा सकते हैं। ऐसे में, इसकी कोई गारंटी नहीं कि सीएफओ की तरफ से आए ई-मेल वाकई उन्होंने ही लिखे हैं। ऐसे में, आश्चर्य नहीं कि सिलिकॉन वैली के अनेक लोग बगैर विराम चिह्नों के पोस्ट लिख रहे हैं- यही एक तरीका है, जिससे पता चल सकता है कि इसमें एआई की मदद नहीं ली गई है। लिखित सामग्री को जांचने का खतरा तो है ही, लेकिन 2024 में असली खतरा आवाज और वीडियो से होगा। इलेवनलैब्स जैसी वॉयस क्लोनिंग सर्विसेज इतनी पेशेवर हैं कि वे हू-ब-हू आवाजों की क्लोनिंग कर लेती हैं। आवाज को जांचने की तकनीक जल्दी ही बेकाम की हो जाएगी। वॉयस मेल विश्वसनीय नहीं है। मैंने अपनी आवाज की क्लोनिंग करा ली है, लिहाजा जो भी पाठ मैं चुनूंगा, वह मेरी ही आवाज में बोलेगा। लेकिन इसका भी एक खतरा है- गलत हाथों में चले जाने पर वह आवाज मेरे स्वर में न जाने क्या-क्या बक डालेगी। इस लिहाज से ऑडियो पर तो ध्यान रखना ही होगा, लेकिन वीडियो ज्यादा महत्वपूर्ण साबित होने जा रहे हैं। वीडियो में दिख रहे व्यक्ति को उसकी ही आवाज में सुने जाने पर भ्रम पैदा होगा। जो उसने नहीं कहा, वीडियो में उसे भी कहते देखा जाएगा। जो उसने नहीं किया, वीडियो में वह करते भी उसे देखा जाएगा। ऐसे में, जाहिर है, पसोपेश, असमंजस और भ्रम की स्थिति पैदा होगी। इससे कॉरपोरेट जासूसी और भयादोहन को बल मिलेगा। वर्ष 2024 में दुनिया की आधी से अधिक आबादी चुनावों में हिस्सा लेगी। अमेरिका के अलावा भारत, इंडोनेशिया, मेक्सिको, रूस और ब्रिटेन सहित कई देशों में चुनाव होंगे। मेरा मानना है कि इनमें से हर चुनाव में डीपफेक वीडियो बड़ी भूमिका निभाएंगे। मतदाताओं में व्याप्त भ्रम का असर चुनावी नतीजों पर भी पड़ सकता है। यूक्रेन और गाजा के मोर्चों पर डीपफेक वीडियोज पहले ही पहुंच चुके हैं, जिससे फैसले उन घटनाओं के आधार पर लिए जा रहे हैं, जो कभी घटी ही नहीं। चुनावी धोखाधड़ी, कॉरपोरेट ब्लैकमेलिंग, बाजारों को अपने हितों के अनुरूप चालित करने और डीपफेक के कारण साइबर सुरक्षा से जुड़े खतरे के मामले वर्ष 2024 में बढ़ेंगे। ऐसे में, यह चर्चा, चिंता और लड़ाई सतत बनी रहेगी कि कोई लिखित सामग्री, कोई तस्वीर, कोई ऑडियो क्लिप या कोई वीडियो असली है या फर्जी।

जिंदगी को अर्थ देने वाले हर शोर में आवाज नहीं होती

जिंदगी को अर्थ देने में जितना ज्यादा हम फिल्मी सितारों पर निर्भर होंगे, उतना ज्यादा वास्तविक उद्देश्यों से भटकते जाएंगे। सड़क सुरक्षा से लेकर नारीवाद और मानसिक स्वास्थ्य से लेकर मानव अधिकार तक सभी मुद्दे मशहूर हस्तियों ने हथिया लिए हैं। बीते 18 दिसंबर को देश के मशहूर फैशन डिजाइनर सब्यसाची मुखर्जी ने दिल्ली में अपना पहला हाई ज्वेलरी शो पेश किया, जो बेहद भव्य था, जिसमें फैशन व लाइफस्टाइल क्षेत्र के देशभर के दिग्गज खास ड्रेस कोड के साथ शामिल हुए। शो में शामिल हर मॉडल ने इतने ज्यादा आभूषण पहने थे कि किसी एक आभूषण पर गौर करना नामुमकिन लग रहा था। यही रूपक इंगित करता है कि जब अति होती है, तो चीजें धुंधली दिखने लगती हैं। साल 2023 की इस रूपक से ज्यादा सटीक व्याख्या नहीं हो सकती, जो सही मायनों में अतियों का वर्ष रहा। दिखावटी शादियों से लेकर सामाजिक मुद्दों के बजाय खुद लोगों के आकर्षण का केंद्र बनने की चाह रखने वाले इंस्टाग्रामर, अत्यधिक यात्राएं, फैशन व फिल्मों का प्रमोशन, नए लॉन्च, बड़े डिस्काउंट और रेड कार्पेट वाली ड्रेसिंग, जो फैशन को दुस्साहस से जोड़ती है, यह सब कुछ 2023 में दिखा। ध्यान आकर्षित करने की वह तड़प भी दिखी, जिसने चीजों को बनाया कम, बिगाड़ा ज्यादा। बॉलीवुड सितारों को लेकर देश के लोगों का स्थायी जुनून चरम को छूता तब दिखा, जब सीमेंट से लेकर गाय का चारा, बीमा पॉलिसी, टायर, पान मसाला और सैनिटाइजर तक हर चीज फिल्म स्टारों द्वारा प्रचारित हो रही हों। सारा कॉन्टेंट फिल्मी शादियों से ही मिल रहा है, मानों सारे महत्वपूर्ण, वास्तविक और क्रांतिकारी विषय, जो प्रयोगों की सुई हिलाने की ताकत रखते थे, अपना अस्तित्व खो चुके हों। 2022 में हमने भौतिक और मनोवैज्ञानिक तौर पर महामारी की गंभीर निराशा से वापसी शुरू कर दी थी। लेकिन वर्तमान साल बाजार और दिमाग, दोनों अतियों के शिकार रहे। हालांकि, महामारी और उसके बाद जलवायु में बदलाव से बढ़ती दुविधाएं हमें सरल और सार्थक ढंग से और स्थानीय संसाधनों के समुचित उपयोग के साथ जिंदगी बिताने के लिए प्रेरित कर सकती हैं। 2023 ने इस उम्मीद को हवा जरूर दी है।

दुनिया का मेला

अप्रैल महीने में मुंबई में एनएमएसीसी (नीता मुकेश अंबानी कल्चरल सेंटर) के लॉन्च के मौके पर आयोजित भव्य समारोह में तमाम वैश्विक हस्तियों, फिल्मी सितारों, सीईओ, लक्जरी ब्रांड्स के बिजनेस प्रमुखों ने भारतीय परिधानों में शिरकत की। उल्लेखनीय है कि भारतीय फैशन अब स्थानीय प्रयोगों से ऊपर जा चुका है। बुनाई, कपड़े और कढ़ाई में यह बेशक भारतीय हो सकता है, लेकिन इसकी कल्पना अब वैश्विक ग्राहकों की पसंद-नापसंद के आधार पर की जा रही है। साल 2023 की शुरुआत कुछ भावनात्मक रही। कार्तिकी गोंसाल्वेस की एक ताजगी से भरी फिल्म द एलिफेंट व्हिसपरर्स को ऑस्कर के लिए चुना गया। ट्रॉफी स्वीकारते वक्त कार्तिकी ने राहुल मिश्रा द्वारा डिजाइन किए गए परिधान पहने थे, जिनमें जंगल की कढ़ाई की गई थी, जबकि उनके साथ मौजूद फिल्म की निर्माता गुनीत मोंगा ने हाथियों की आकृति वाली साड़ी पहनी हुई थी। एनएमएसीसी समारोह के सोशल मीडिया पर देश में सबसे ज्यादा देखे जाने वाले कार्यक्रम बनने से पहले फ्रांसीसी लक्जरी ब्रांड डायर ने मुंबई में ऐतिहासिक गेटवे ऑफ इंडिया पर अपना ऑटम-विंटर कलेक्शन प्रस्तुत किया। इस दौरान मुंबई के चाणक्य स्कूल ऑफ क्राफ्ट का सम्मान भी किया गया, जो पिछले कई वर्षों से डायर ब्रांड के लिए कढ़ाई का काम कर रहा है। ब्रांड की कला निदेशक मारिया ग्राजिया चिउरी भारतीय शिल्प कौशल की तारीफ करते हुए और संस्थान के कारीगरों को धन्यवाद कहते हुए इसके योगदान को भी स्वीकार किया। साल बीतने के साथ भारतीय फैशन का आकार भी बढ़ता गया। अमेरिकी गायिका और रचनाकार बियॉन्से ने पूरी दुनिया के अपने दौरे में एक नहीं, बल्कि तीन बार गौरव गुप्ता द्वारा डिजाइन किए हुए परिधान पहने। गुप्ता द्वारा निर्मित जिन तीन पोशाकों को उन्होंने चुना, उसमें एक हल्के हरे रंग की साड़ी थी, जिसने काफी सुर्खियां भी बटोरी थीं। गौरव गुप्ता ने अपने ब्रांड के लिए इस महान क्षण को स्वीकारते हुए कहा, %मैं एक भारतीय हूं और मेरे सभी कपड़े भारत में बने हैं, लेकिन मेरी रचनात्मक अभिव्यक्ति उदार है, जो किसी धारणा से बंधी न होकर, वैश्विक है। मेरी अभिव्यक्ति मुझे किसी एक देश से बांध कर नहीं रखती।% फैशन की दुनिया में यह वाकई गर्व का क्षण था।

फर्जी चिंताओं का कारोबार

फैब्रिक कला, फैशन व शिल्प किस तरह पर्यावरण संरक्षण में योगदान दे सकते हैं, इस पर संवाद, आजादी की 75वीं सालगिरह पर भारत के विचार (आइडिया ऑफ इंडिया) को जाहिर करने वाले परिधानों की %सूत्र-संतति% जैसी प्रदर्शनियां, रिसाइक्लिंग और सर्कुलर डिजाइन तेजी से नोटिस में आ रही हैं। लेकिन इन विचारों के समानांतर एक अलग किस्म का फर्जीवाड़ा भी दिख रहा है। हर दूसरा ब्रांड संयुक्त राष्ट्र सतत विकास लक्ष्यों द्वारा निर्धारित पैमानों पर ध्यान दिए बगैर स्थायित्वपूर्ण विकास की बात करता है। दिलचस्प बात यह है कि जो डिजाइनर या ब्रांड फिल्मी सितारों को कपड़े पहनाने में असमर्थ रहते हैं, वे पर्यावरण की चिंता करते दिखने लगते हैं। लेकिन, अगर आप भारतीय शिल्प के सच्चे प्रशंसक हैं, तो आपको समझना चाहिए कि ग्रीन के नाम पर बेची जाने वाली हर चीज सतत विकास के विचार के अनुरूप नहीं होती। अपनी जिंदगी को अर्थ देने में जितना ज्यादा हम फिल्मी सितारों पर निर्भर होंगे, उतना ज्यादा हम वास्तविक उद्देश्यों से भटकते जाएंगे। सड़क सुरक्षा से लेकर नारीवाद और मानसिक स्वास्थ्य से लेकर मानव अधिकार तक सभी मुद्दे मशहूर हस्तियों ने हथिया लिए हैं। इसके अलावा, यह भी समझना होगा कि भारत में निर्मित हर चीज वैश्विक मंच पर सराहना की पात्र बने, यह जरूरी नहीं। हर शोर में आवाज नहीं होती। (आवाज़ तो लक्ष्य को भेदती है, शोर सिर्फ ध्यान आकर्षित करता है) उम्मीद है कि 2024 हमें ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी द्वारा 2023 के लिए चुने गए शब्द uthentic (ऑथेन्टिक /प्रामाणिक) और मेरियम वेबस्टर डिक्शनरी द्वारा चुने गए वर्ष के शब्द ऋद्ध55 (रिज़ /चमत्कार की क्षमता) के बीच फर्क को समझाएगा और यह भी कि दोनों को मिलाए बगैर अलग-अलग रहकर भी महत्व दिया जा सकता है।

सीजन के सौदागर आते रहेंगे, समाधि की उस स्थिति से बचना है मुश्किल

तितलियों के प्रेम में पड़कर उनके पीछे भागना एक बात है और उन्हें मारकर अपनी किताब के पन्नों में रख लेना दूसरी। मरी हुई तितलियां अपने रंगों से कभी नहीं खेलतीं, उनके कण जरूर जिंदगी के पन्नों पर चिपके पड़े रह जाते हैं। ये?कण अब खूब चमक रहे हैं। साधारण चीजों को जटिल बना देना आम बात है, जटिल को सरल बना देना कला है। वाइल्ड ने ही कहा है, हमारे तमाम आधुनिक कैलेंडर हमारी जिंदगी की खूबसूरत सादगी को भंग कर देते हैं - यह याद दिलाकर कि हर दिन जो गुजरता है, वो किसी बेहद बेस्वाद वाकये की 'एनीवर्सरी' है। जब साल जाने लगता है तो आप अचानक या तो भावुक हो उठते हैं या चिंतित। अलबत्ता लोगों में यह बताने का चलन है कि इस साल में जो न हुआ आते साल में होना तय है। कुछ लोग भय और आशंकाओं के मैन्यू तैयार करते हैं गोया यही भविष्य के रेस्टोरेंट में मिलने वाला है। कई तो उसमें से चुनाव भी कर लेते हैं कि कौन सी कम तकलीफदेह 'डिश' ज्यादा मुफीद होगी। मजा यह है कि रेस्टोरेंट भी उन्हीं का, शेफ भी वही और ग्राहक भी वही। यह अपने आप में बड़ी मुसीबत है कि आप समाधि की इस स्थिति में पहुंच जाएं - जहां आप ही बनाएं, आप ही खाएं, आप ही बिल चुकाएं और आप ही बजट के घाटे पर अर्थशास्त्रियों को ज्ञान भी दें। मगर लोग हैं कि हर बार इसी मुसीबत को मुहब्बत कर बैठते हैं। इसका फायदा 'सीजन के सौदागर' उठाते हैं। यह साल ऐसे सौदागरों की चांदी का साल था। आप जानते हैं - सीजन के सौदागर का कोई एक धंधा नहीं होता। जिस मौसम में जिसकी मांग होती है, वही चीज खड़ी कर देते हैं। कंस के दिनों में कंस की, कृष्ण के दिनों में कृष्ण की। यहां तक कि स्कूलों के वार्षिक उत्सव के दिनों में फैंसी ड्रेसों के किराए का धंधा भी चला लेते हैं। अगर कत्ल होने लगें तो वे चाकू बेचना शुरू कर दें, शांति में मुनाफा ज्यादा हो तो कबूतर बेचने का बोर्ड लगा दें। पिछले साल जाते-जाते हमने दो शब्दों पर बात की थी, जो उस साल के सबसे ज्यादा प्रतीकात्मक शब्द बन गए थे - गैस लाइटिंग और मून लाइटिंग। पहले का अर्थ था कि किसी को गलत न होते हुए भी उसे गलत होने का अहसास दिला देने की चालाकी, और दूसरे का अर्थ था - पूरी तनख्वाह एक जगह लेकर गुपचुप दूसरी जगह से भी कमाई पीट लेना। दोनों में बेईमानी और बेईमानी की स्वाभाविक नैतिक जरूरत पर पर्याप्त कागज रंगे गए थे। अब बात कुछ आगे बढ़ गई है। इस साल ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने साल का शब्द घोषित किया है - रिज़ (RIZ)। ये करिज्मा (Charismas) या करिश्मा का संक्षिप्त रूप है। सूची में दूसरे नंबर पर आया है - प्रॉम्प्ट (Prompt)। इसका मतलब है एआई उर्फ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस प्रोग्राम के निर्देश। तीसरा इन सबको बराबर कर देता है - सिचुएशनशिप (Situationship)। ये सिचुएशन (Situation) और रिलेशनशिप (Reletionship) का जोड़ है। अहा! सीजन के सौदागर अति प्रसन्न हैं। यह परिस्थिति के अनुसार रिश्ते बना लेने का प्रतिज्ञाविहीन समय है जब आप अपने 'रिज़' का इस्तेमाल किसी लूट के लिए कर लें और 'एआई' को प्रॉम्प्ट दे दें कि चलो अब एक नया चमत्कारिक धोखा खड़ा करते हैं। वेबस्टर डिक्शनरी में इसीलिए इस साल दो दूसरे शब्द 'ऑथेन्टिक' (प्रामाणिक) और 'डीप फेक' टॉप पर हैं। जब सबसे ज्यादा 'डीप फेक' यानी असली लोगों के झूठे वीडियो बनने लगें तभी हमें प्रामाणिकता की प्यास भी उतनी ही शिद्दत से सताने लगती है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे हमारी चिंताएं बढ़ चली हैं और प्रामाणिकता की पवित्रता को हम ज्यादा समर्पित होते चले जा रहे हैं। सीजन के सौदागर हमेशा आपकी चिंता और आपकी प्यास दोनों को समझते आए हैं।

तो इस साल क्या खास हुआ?

ध्यान से देखिए इस साल कुछ ज्यादा ही खास हुआ। पहले सीजन के सौदागर मांग के हिसाब से दुकान का माल बदल दिया करते थे। कत्ल का सीजन तो चाकू और शांत सीजन तो कबूतर। अब वे एक ही दुकान में दो काउंटर बना कर दोनों एक साथ बेचने लगे हैं। और तो और, पड़ोस में ही एक 'बहस-बार' भी चलाते हैं जहां पहले दोनों काउंटर के दोनों के जियाले एक-दूसरे के खिलाफ बोलते हैं। इस तरह से एक सीजन में तीन सीजन की कमाई खड़ी होती है और निरपेक्षता का डिविडेंड अलग से मिल जाता है। इंस्टाग्राम-यूट्यूब इकनॉमी में सच और झूठ दोनों कमाते हैं। देखने वाला भी, दिखाने वाला भी! दोनों एक ही कंपनी के राजा चलाते हैं, इसलिए लाभ एक ही जेब में जाता है। तभी तो आतंकी संगठन भी अपने नाम में 'पीस', 'पॉपुलर' और 'सर्वजन' जैसे शब्द डालते हैं या भले लोग अपनी भलाई के विज्ञापन के लिए सोशल मीडिया मैनेजरों की फौज पर कुर्बान हुए जाते हैं। इसीलिए संदीप वांगा ने जब अपनी कुख्यात फिल्म एनीमल के खिलाफ टिप्पणियां पढ़ीं तो कहा, 'ये दस-पंद्रह जोकर हैं जो मेरे काम को मर्दवादी, स्त्रीद्वेषी कह रहे हैं। अरे, मेरे प्रोडक्शन हाउस का नाम ही देखिए - 'भद्रकाली' है।' तो, दरअसल, ये साल एनीमल का साल है। इसके बॉक्स ऑफिस से पता चलता है कि इन दिनों समाज का सीजन कौनसा है? बॉक्स ऑफिस नैतिकता नहीं जानता, वह नोट गिनता है। तितलियों के प्रेम में पड़कर उनके पीछे भागना एक बात है और उन्हें मारकर अपनी किताब के पन्नों में रख लेना दूसरी। मरी हुई तितलियां अपने रंगों से कभी नहीं खेलतीं, उनके कण जरूर जिंदगी के पन्नों पर चिपके पड़े रह जाते हैं। ये?कण अब खूब चमक रहे हैं। एनीमल, अंततः उसी डर का विस्तार है जिसमें एक पागल, प्रेम के नाम पर दूसरे की पत्नी का पीछा करता है और पब्लिक इस अपराध में शामिल होकर तालियां बजाती हैं। खलनायक होते हुए भी जो नायक बना दिया गया था - वह आहिस्ता-आहिस्ता अपने औचित्य को सिद्ध करता हुआ डर के 'राहुल' से एनीमल के 'रणविजय' में तब्दील हो गया है। अब उसके पास कोई दबी-छुपी नैतिक सफाई या संकोच नहीं है। अर्जुन रेड्डी या कबीर सिंह से प्रेरित मर्दों की विकट परंपरा को संदीप वांगा ने जब एनीमल में लाने का ऐलान किया था तभी कह दिया था - मेरी अगली फिल्म और ज्यादा भयंकर होने वाली है। अब जबकि फिल्म कई करोड़ कूट चुकी है उनके अक्स में पूरे साल की मरी हुई तितली दिखाई देती है। टेरेंटिनो जैसे ख्यात फिल्मकारों के उदाहरण से हिंसा के अतिरेक को क्राफ्ट, टेक्नीक तथा सिनेमाई कला के नजरिए से देखने की राय दी जा रही है। जबकि यथार्थ का प्रस्तुतीकरण और विचार का प्रमोशन दो भिन्न चीजें हैं और एनीमल दूसरे हिस्से में अपना दावा दर्ज कराती है। वह स्त्रियों से घृणा, धोखे को मूल्य और उद्देश्यहीन हिंसा के क्रम में लाशें बिछाने को मर्दानगी की निर्द्वंद्व स्वीकृति और मुहर देती है। शोभा डे, खुद एक विकट एलीट कही जाती रही हैं पर उनकी टिप्पणी है, एनीमल एक जानवर ने जानवरों के लिए बनाई है जो खुद जानवरों के नाम को बदनाम कर रहे हैं क्योंकि जानवर भी ऐसा नहीं करते। हमारे पाठकों को शायद इसी बहाने इस साल मर्दों की अल्फा, बीटा, ओमेगा, गामा, सिग्मा या डेल्टा मेल प्रजातियों का भी पता चला होगा। 'अल्फा मेल' को यूं समझिए जैसे भेड़ियों के झुंड में सबका 'दादा'। हर चीज अपने नियंत्रण में रखने वाला भेड़िया जो चाहे जिस मादा को चुन सकता है, चाहे जो अपने लिए ले सकता है, पहला हक उसी का है, उसके दायरे में कोई फटक नहीं सकता। लेकिन, उसकी शक्ति में झुंड की सुरक्षा शामिल है। वह लीडर है, वीर है, वह जो करता है, सही है। गामा झगड़े मोल नहीं लेता, ओमेगा समाज की परवाह नहीं करता, डेल्टा काम से काम रखता है, सिग्मा चतुर है और हर चीज हिसाब देखकर तय करता है। अल्फा मेल एक किस्म की स्वीकृति है और तू झूठी, मैं मक्कार के दौर में एक धुआंधार दावा है। यही वो चीज है जो हमें आईना दिखाती है कि हमने एनीमल को करोड़ों देकर नया शाहकार बनाया है। एक सीजन के सौदागर अनुराग कश्यप हैं। गैंग्स ऑफ वासेपुर वाले कश्यप ने धंधे की बड़ी सच्ची बात कह दी है। पहले उन्होंने कहा, फिल्म देखना भी वोट देने जैसा है - जो देखना चाहोगे, वैसा पाओगे। फिर उन्होंने एनीमल पर एक कल्याणकारी कार्य करने का बिल्ला चिपकाया। कहा, 'ऐसी फिल्में फैमिनिज्म (स्त्रीवाद) पर बहस खड़ी कर देती हैं। एनीमल से 'मिसोजिनी' (स्त्रियों से मर्द की घृणा) पर समाज में बहस तो खड़ी हुई - तो ये भी उसका एक बड़ा योगदान हुआ।' यही वक्तव्य वह चीज है जो साल की हर चीज को एक जगह लाकर खड़ा कर देती है। धंधे का धंधा और ज्ञान का ज्ञान। 'डीप फेक' भी चाहिए 'ऑथेन्टिसिटी' भी। 'रिज़' भी चाहिए और 'सिचुएशनशिप' भी। ऑस्कर वाइल्ड ने इतनी 'सादगी' की शायद ही कल्पना की हो। लेकिन, बावजूद इसके अगर हम जानते हैं कि जीवन का मूल्य क्या है तो हमें और जोरों से सरल और मूल्यवान होने की तलब लगती रहेगी। इस आलेख के साथ एक चित्रकार की कल्पना का अंश जा रहा है, जिसमें एक बिल्ली अपना आलस झाड़ रही है और एक तितली उसके पास निर्द्वंद्व भाव से उड़ रही है। तितली मारी नहीं जा रही, अंगड़ाई लेती बिल्ली से जैसे जीवन का रंग बांट रही है। मुझे आने वाले साल के लिए यह चित्र सर्वाधिक उपयुक्त जान पड़ा। फोमो (FOMO-फियर ऑफ मिसिंग) की बजाय जोमो (JOMO-जॉय ऑफ मिसिंग) की तरफ चलें। छूटने का दुख की बजाय, अच्छा हुआ जो वह छूटा - के आनंद की तरफ जाएं तो शायद हम अगले साल का असली 'रिज़' पा सकेंगे। वर्ना, सीजन के सौदागर तो आते रहेंगे।

नया साल, नई उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य

-प्रियंका सौरभ

नए साल पर अपनी आशाएँ रखना हमारे लिए बहुत अच्छी बात है, हमें यह भी समझने की ज़रूरत है कि आशाओं के साथ निराशाएँ भी आती हैं। जीवन द्वंद्व का खेल है और नया साल भी इसका अपवाद नहीं है। यदि हम %बीते वर्ष% पर ईमानदारी से विचार करें, तो हमें एहसास होगा कि हालांकि यह आवश्यक नहीं है कि वर्ष ने वह प्रदान किया हो जो हमने उससे चाहा था, लेकिन इसने हमें कुछ बहुमूल्य सीख और अनुभव अवश्य दिए। ये अलग से बहुत महत्वपूर्ण नहीं लग सकते हैं, लेकिन संभवतः ये प्रकृति का हमें उस उपहार के लिए तैयार करने का तरीका है जो उसने हमारे लिए रखा है जिसे वह अपनी समय सीमा में वितरित करेगी। साथ ही, अगर साल ने हमसे कुछ बहुत कीमती चीज़ छीन ली है, तो निश्चित रूप से उसने उसकी समान मात्रा में भरपाई भी कर दी है। वर्ष के अंत में, हमें एहसास होता है कि हमारी बैलेंस शीट काफी उचित है। तो, आइए हम आने वाले वर्ष में इस विश्वास के साथ प्रवेश करें कि नए साल का जादू यह जानने में निहित है कि चाहे कुछ भी हो, हर निराशा के लिए मुआवजा होगा, हर इच्छा की पूर्ति के लिए एक सीख होगी। नया साल हमारे लिए नया समय ही नहीं बल्कि नए समय के साथ नई उम्मीदें, नए सपने, नया लक्ष्य, नए विचार और नए इरादे लेकर आता है। हम सभी को नए साल की शुरुआत अच्छे और नेक कामों के साथ करनी चाहिए। नया साल हमारे मन के भीतर आशा की नई किरण जगाता है। नया साल तो हर साल आता है लेकिन क्या कभी हमनें ये सोचने की कोशिश की है कि हमने इस साल क्या नया और खास किया जिससे ये साल हमारे लिए यादगार साल बन जाए। हम अपनी जिंदगी में बहुत से उतार-चढ़ाव का सामना करते हैं और ये जरूरी नहीं है कि हर व्यक्ति के लिए हर साल अच्छा ही जाए या हर साल हर किसी के लिए बुरा ही जाए लेकिन इसका मतलब ये नहीं होता है कि हम बीते कल को भूल जाएं। बीता हुआ कल तो हमें आज के लिए और आने वाले कल के लिए सीख देकर जाता है कि कैसे हम अपने कल को आज से बेहतर बना सकते हैं- *बीत गया ये साल तो, देकर सुख-दुःख मीत। क्या पता? क्या है बुना ? नई भोर ने गीत।। जो खोया वो सोचकर, होना नहीं उदास। जब तक साँसे ये चले, रख खुशियों की आस।।* हर साल, साल-दर-साल, हम अपने दिल में एक गीत और कदमों में वसंत के साथ नए साल में प्रवेश करते हैं। हमें विश्वास है कि जादुई वर्ष अपने साथ हमारी सभी समस्याओं का समाधान लाएगा और हमारी सभी इच्छाएँ पूरी करेगा। चाहे वह सपनों का घर हो, सपनों का प्रस्ताव हो, सपनों की नौकरी हो, सपनों का साथी हो, सपनों का अवसर हो... और भी बहुत कुछ बेहतर हो। लेकिन जैसे-जैसे साल शुरू होता है और हम जो कुछ भी सामने आता है उससे निपटते हैं, नए साल की नवीनता, नए संकल्प, नई शुरुआत पहली तिमाही तक लुप्त होने लगती है। वर्ष के मध्य तक हम बहुत अधिक सामान्यता और कई फीकी आशाओं की चपेट में होते हैं, जो उस वादे से बहुत दूर है जिसके साथ हमने शुरुआत की थी। और आखिरी तिमाही तक हम अपनी वास्तविकता से इतने अभिभूत हो जाते हैं कि हम साल खत्म होने का इंतजार नहीं कर सकते। हम वर्तमान वर्ष को छोड़ते हुए और एक और %नया साल% मनाने के लिए पूरी तरह तैयार हो जाते हैं और शुभकामनाएं बांटते है- *बाँट रहे शुभकामना, मंगल हो नववर्ष। आनंद उत्कर्ष बढ़े, हर चेहरे हो हर्ष।। गर्वित होकर जिंदगी, लिखे अमर अभिलेख। सौरभ ऐसी खींचिए, सुंदर जीवन रेख।।* नववर्ष वह समय है जब हमें अचानक लगता है कि, ओह, एक साल बीत गया। हम कुछ पलों के लिए स्तब्ध हो जाते हैं कि समय कितनी जल्दी बीत जाता है, और फिर हम वापिस अपने काम में व्यस्त हो जाते हैं। मजे की बात यह है कि ऐसा साल में लगभग एक बार तो होता ही है। यदि हम आश्चर्य के इन क्षणों की गहराई में जाएं, तब हम पाएंगे कि हमारे भीतर कुछ ऐसा है जो सभी घटनाओं को साक्षी भाव से देख रहा है। हमारे भीतर का यह साक्षी भाव अपरिवर्तित रहता है और इसीलिए हम समय के साथ बदलती घटनाओं को देख पाते हैं। जीवन की वे सभी घटनाएं जो बीत चुकी हैं, एक स्वप्न बन गई हैं। जीवन के इस स्वप्न-जैसे स्वभाव को समझना ही ज्ञान है। यह स्वप्न अभी इस क्षण भी चल रहा है। जब हम यह बात समझते हैं तब हमारे भीतर से एक प्रबल शक्ति का उदय होता है और फिर घटनाएं व परिस्थितियां हमें हिलाती नहीं हैं। हालांकि, घटनाओं का भी जीवन में अपना महत्व है। हमें घटनाओं से सीखना चाहिए और आगे बढ़ते रहना चाहिए। नया साल नई उम्मीदें, नए सपने, नए लक्ष्य और नए आइडिया की उम्मीद देता है, इसलिए सभी लोग खुशी से बिना किसी मलाल के इसका स्वागत करते हैं-

आते जाते साल है, करना नहीं मलाल। सौरभ एक दुआ करे, रहे सभी खुशहाल।। छोटी सी है जिंदगी, बैर भुलाये मीत। नई भोर का स्वागतम, प्रेम बढ़ाये प्रीत।। हालाँकि नए साल पर अपनी आशाएँ रखना हमारे लिए बहुत अच्छी बात है, हमें यह समझने की ज़रूरत है कि आशाओं के साथ निराशाएँ भी आती हैं। जीवन द्वंद्व का खेल है और नया साल भी इसका अपवाद नहीं है। यदि हम %बीते वर्ष% पर ईमानदारी से विचार करें, तो हमें एहसास होगा कि यह आवश्यक नहीं है कि वर्ष ने वह प्रदान किया हो जो हमने उससे चाहा था, लेकिन इसने हमें कुछ बहुमूल्य सीख और अनुभव अवश्य दिए। ये अलग से बहुत महत्वपूर्ण नहीं लग सकते हैं, लेकिन ये संभवतः प्रकृति का हमें उस उपहार के लिए तैयार करने का तरीका है जो उसने हमारे लिए रखा है जिसे वह अपनी समय सीमा में वितरित करेगी। साथ ही, अगर साल ने हमसे कुछ बहुत कीमती चीज़ छीन ली है, तो निश्चित रूप से उसने उसकी समान मात्रा में भरपाई भी कर दी है। वर्ष के अंत में, हमें एहसास होता है कि हमारी बैलेंस शीट काफी उचित है। तो, आइए हम आने वाले वर्ष में इस विश्वास के साथ प्रवेश करें कि नए साल का जादू यह जानने में निहित है कि चाहे कुछ भी हो, हर निराशा के लिए मुआवजा होगा, हर इच्छा की पूर्ति के लिए एक सीख होगी, दर्द-दुखों का अंत होगा, अपनेपन की धूप होगी- *छँटे कुहासा मौन का, निखरे मन का रूप। सब रिश्तों में खिल उठे, अपनेपन की धूप।। दर्द-दुखों का अंत हो, विपदाएं हो दूर। कोई भी न हो कहीं, रोने को मजबूर।।* नए साल पर अपने लिए लक्ष्य निर्धारित कर लें। छात्र हों या नौकरीपेशा, सभी के लिए कोई न कोई लक्ष्य होना जरूरी होता है। भविष्य को बेहतर बनाने के लिए क्या कर सकते हैं और किस दिशा में प्रयास करना है, इन सब का निर्धारण करने के बाद उसे पूरा करने का संकल्प ले लें। आपका संकल्प हमेशा लक्ष्य को पूरा करने की याद दिलाता रहेगा। सभी %नए साल% को जीवनकाल से जोड़ते हैं और हमारा जीवनकाल आशाओं और निराशाओं, सफलताओं और असफलताओं, खुशियों और दुखों के बारे में है और यह वर्ष भी कम जादुई नहीं होगा। तो इस वर्ष आप अपने संकल्पों को कैसे पूरा कर सकते हैं? इस बारे सोच समझकर आगे बढिये, दूसरों से समर्थन मांगें, अपने मित्रों और परिवार से आपका उत्साह बढ़ाने के लिए कहें। उन्हें अपने लक्ष्य बताएं और आप क्या हासिल करना चाहते हैं। अपने लिए एक इनाम प्रणाली बनाएं, अल्पकालिक लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें पूरा करने के लिए स्वयं को पुरस्कृत करें। अपने ऊपर दया कीजिये, कोई भी एकदम सही नहीं होता। अपने आप को कोसने की बजाय गहरी सांस लें और नव उत्कर्ष के प्रयास करते रहें- *खोल दीजिये राज सब, करिये नव उत्कर्ष। चेतन अवचेतन खिले, सौरभ इस नववर्ष।।

हँसी-खुशी, सुख-शांति हो, खुशियां हो जीवंत। मन की सूखी डाल पर, खिले सौरभ बसंत।।* ऐसा माना जाता है कि साल का पहला दिन अगर उत्साह और खुशी के साथ मनाया जाए, तो पूरा साल इसी उत्साह और खुशियों के साथ बीतेगा। हालांकि भारतीय परम्परा के अनुसार नया साल एक नई शुरुआत को दर्शाता है और हमेशा आगे बढने की सीख देता है। पुराने साल में हमने जो भी किया, सीखा, सफल या असफल हुए उससे सीख लेकर, एक नई उम्मीद के साथ आगे बढ़ना चाहिए। ताकि इस वर्ष की एक सुखद पहचान बने- *खिली-खिली हो जिंदगी, महक उठे अरमान। आशा है नव साल की, सुखद बने पहचान।। छेड़ रही है प्यार की, मीठी-मीठी तान। नए साल के पँख पर, खुशबू भरे उड़ान।।

हैप्पी न्यू ईयर अम्मा घबराओ नहीं कटनी पुलिस है आप के साथ

❖ जब भटक कर एक वृद्ध महिला पहुंची कुठला थाने, मानवता का परिचय देते हुए कटनी पुलिस ने मिलवाया परिवार से और फूल मालाएं पहनाकर वृद्ध मां को किया पति के साथ रवाना

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश, कटनी। पति के साथ सड़क मार्ग से अपने बेटे के यहां महाराष्ट्र जा रही एक वृद्ध महिला भटक कर ऑटो चालक की मदद से कुठला थाने आ पहुंची। परिवार से बिछडी वृद्ध महिला के पास ना तो कोई संचार साधन थे और ना ही रूपए पैसे, ऐसे में वह करती भी तो क्या। ऑटो चालक के साथ जब बूढ़ी मां कुठला थाने पहुंची तो वहां मौजूद कुठला प्रभारी अभिषेक चौबे ने बूढी मां के दर्द को समझते हुए मुस्कुराते हुए उन्हें हैप्पी न्यू ईयर कहा और कहा अम्मा घबराओ नहीं हम बैठे हैं तुम्हारे साथ। अभी हम परिवार से मिलते हैं आपको। कुछ ही देर में थाना प्रभारी अभिषेक चौबे ने उनके परिवार से संपर्क किया और मां को छोड़कर आगे बढ़ गई गाड़ी को वापस बुलाया और गाड़ी के आने के बाद बूढी मां का पुष्प मालाओं से स्वागत करते हुए उन्हें पति के साथ विदा किया। पुलिस के मानवीय स्वरूप को देखकर वृद्ध मां नम आंखों से उन्हें आशीर्वाद देते हुए और नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए आगे की ओर रवाना हो गई। पूरे घटनाक्रम के संबंध में जानकारी देते हुए कुठला थाना प्रभारी अभिषेक चौबे ने बताया कि आज रविवार शाम थाने का पूरा स्टाफ नववर्ष की गस्त और मुस्तैदी की तैयारियों में लगा था इसी बीच एक ऑटो चालक ग्राम समई राजपतानी जिला भदोही उत्तर प्रदेश निवासी 65 वर्षीय श्रीमती लालती यादव पति प्रेम बहादुर यादव को लेकर थाने पहुंचा। जानकारी देते हुए ऑटो चालक ने बताया कि बूढ़ी मां चाका बाईपास के पास रोते हुए भटक रही थी। लालती देवी ने बताया की वह पति के साथ बेटे के पास कार द्वारा अमरावती महाराष्ट्र जा रही थी। चाका बाईपास के कुछ दूर पहले कुछ देर आराम करने के लिए रुकी तो वह भी कार से उतर गई। थोड़ी देर के बाद पति कार लेकर आगे चले गए जबकी बूढ़ी मां कार में बैठ भी नहीं पाई थी।

पति ने कहा हम ध्यान नहीं दिए

कुठला पुलिस से सूचना मिलने के बाद जब वृद्ध महिला के पति थाने पहुंचे तो उन्होंने कहा की हम लोगों ने ध्यान नहीं दिया की ये कार में बैठी या नही। जब फोन आया तब हमारा ध्यान इस ओर गया। थाने से जाते हुए वृद्ध मां और उसके पति ने थाना प्रभारी सहित समस्त स्टाफ का धन्यवाद करते हुए उन्हें नववर्ष की शुभकामनाएं दी।

जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों की बैठक संपन्न

❖ योजनाओं के गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन और समावेशी विकास पर हुई सारगर्भित चर्चा,जनप्रतिनिधियों ने दिए कई सुझाव।

❖ बैठक में विधायक, महापौर, कलेक्टर और एसपी रहे मौजूद

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश, कटनी। कलेक्ट्रेट कार्यालय में नव वर्ष की पूर्व संध्या पर रविवार को जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों ने जिले में चल रही विकसित भारत संकल्प यात्रा ,मुख्यमंत्री जी की अध्यक्षता में आगामी 3 जनवरी को आयोजित होने वाली संभागीय समीक्षा बैठक सहित जिले में संचालित विकास एवं निर्माण कार्यों और जनहित के कई अन्य विषयों पर सार्थक चर्चा हुई। बैठक में मुड़वारा विधायक संदीप जायसवाल, बहोरीबंद विधायक प्रणय प्रभात पाण्डेय, महापौर प्रीति संजीव सूरी, कटनी विकास प्राधिकरण अध्यक्ष पीताम्बर टोपनानी, कलेक्टर अवि प्रसाद, पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी शिशिर गेमावत, नगर निगम आयुक्त विनोद कुमार शुक्ल, उपायुक्त पवन कुमार अहिरवार सहित अन्य जिला अधिकारियों की मौजूदगी रही। बैठक के दौरान जनप्रतिनिधियों और अधिकारियों के मध्य बेहतर समन्वय के साथ केन्द्र एवं राज्य सरकार की जनहितैषी योजनाओं का लाभ समाज के अंतिम छोर तक पहुंचाने, विकास कार्यो में लापरवाही को रोकने और सरकार की योजनाओं का गुणवत्तापूर्ण तरीके से समय पर क्रियान्वयन सुनिश्चित करने जैसे विभिन्न योजनाओं पर विस्तार पूर्वक की गई। बैठक के दौरान जिले में आयोजित की जा रही विकसित भारत संकल्प यात्रा के क्रियान्वयन के दौरान आयोजित की जा रही गतिविधियां एवं हितलाभ वितरण पर चर्चा की जाकर उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा अपने- अपने सुझाव दिये गए। बैठक में लोक निर्माण विभाग, लोक निर्माण विभाग भवन, लोक स्वास्थ्य एवं यांत्रिकी विभाग, प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, उर्जा विभाग, लोक स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, महिला एवं बाल विकास, स्कूल शिक्षा विभाग सहित जिले में अन्य विभागों के माध्यम से संचालित हो रहे विकास कार्यो की समीक्षा की जा जाकर कार्यो गुणवत्तापूर्ण तरीके से निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण कराने के महत्वपूर्ण सुझाव उपस्थिति जनप्रतिनिधियों द्वारा दिए गए।

हापुड़ पुलिस की एक पहल ने 125 लोगो के खोये हुए मोबाइल बरामद कर लोगो के चेहरे पर लौटाई मुस्कान

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। पुलिस ने नए वर्ष से एक दिन पहले कई लोगो के चेहरे पर मुस्कान वापस लौटाई है। जिसमें पुलिस ने करीब 125 लोगो के खोये हुए करीब 31 लाख रुपये से भी अधिक कीमत के मोबाइलों को बरामद कर वापस लौटाया है जिसके बाद लोगो के चहेरे पर मुस्कान देखने को मिली है आपको बता दे हापुड़ पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा द्वारा पुलिस लाइन में प्रेस वार्ता करते हुए बताया कि हापुड जनपदीय स्वाट टीम द्वारा हापुड़ पुलिस ने नागरिको के गुम शुदा एवं खोये हुए मोबाइल फोन को बरामद किये जाने हेतु एक पहल की है जिसमे लिंक व क्यूआर कोड के माध्यम से शिकायत दर्ज की जाती है और मिली शिकायतों के आधार पर कार्यवाही करते हुए करीब 125 मोबाईल बरामद कर उनके स्वामियों को सौप दिया है अपने खोए हुए मोबाइल पाकर लोगों के चेहरे खुशी से खिल उठे और उन्होंने हापुड़ पुलिस का अभार प्रकट करते हुए भूरी भूरी प्रशंसा की है। और पुलिस अधीक्षक अभिषेक वर्मा ने लोगों से अपील की है वह घर बैठे अपने खोए हुए मोबाइल की शिकायत लिंक व क्यूआर कोड के माध्यम से दर्ज कर सकते हैं

एक नज़र

अयोध्या मंदिर के प्रथम पक्ष याचिका पर राजेश मणि त्रिपाठी का बड़ा बयान

अयोध्या राम मंदिर के भव्य उद्घाटन पर हमें बहुत खुशी

आज धर्म नीत से बड़ी हो गई है राजनीति

बहुत ही कम समय में राम मंदिर की तरह बनेगा कृष्ण मंदिर

द अचीवर टाइम्स दीपक कनौजिया।

लखनऊ। आज बहुत खुशी की बात है कि कृष्ण जन्मभूमि के लिए एक पत्र प्रशस्त्रि हुआ है। और मैं दावे के साथ कहता हूं राम जन्मभूमि के लिए हमने और कमलेश जी ने लगातार लड़ाईयां लड़ी यह किसी को बताने की जरूरत नहीं है। और आपको बता दें हिंदू महासभा के बैनर के नीचे पहली मूर्ति अवैद्यनाथ जी ने जिस तरह से रखी कमलेश जी उसके प्रथम पक्षकार रहे थे और आज इतनी खुशी हम लोगों को मिल रही है। की कितनी बार उस जमीन उस मंदिर के लिए हम लोग जेल गए कितनी प्रताड़नाए झेली लेकिन जेल तो हमेशा हम लोगों को ही जाना पड़ा हम और कमलेश जी ही गए। और आज जब धर्म की राजनीति को तराजू से लोगों ने तौलना शुरू कर दिया तो उसमें कामों का कोई अवचित ही नहीं रह जाता वहां सिर्फ राजनीति ही होती है। उन्होंने पत्रकारों से बातचीत करते हुए बताया की अयोध्या में राम मंदिर के भव्य उद्घाटन को लेकर निमंत्रण में हम लोगों को नहीं बुलाया गया तो क्या हुआ साध्वी तुमरा जैसे व्यक्ति आडवाणी और जोशी जी जैसे यहां तक वहां के लोकल के लोगों जिनका बराबर राम जन्मभूमि की लड़ाई में संपूर्ण त्याग और बलिदान रहा उनको भी नहीं पूछा गया। आपको बता दें सच्चाई यह है कि आज धर्म नीत से बड़ी राजनीति हो गई है। और उसको यह कह सकते हैं कि धर्म नीति कहीं बची नहीं है। आज जिस राम जन्मभूमि को लेकर धर्म नीत की जगह पर राजनीति का इतना बड़ा खेल खेला जा रहा है। वही राम और सीता ने अपने आम जनता को जगाने के लिए अपनी सत्ता और राज्य को छोड़कर वनवास जाना पड़ा था। आज उस राम के नाम पर जिस तरह से राजनीति हो रही है वह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। और मुझे दुर्भाग्य नहीं कहना चाहिए क्योंकि आज की स्थिति और पस्थिति हमारे सनातन के विरुद्ध एक तरह से चल रही है यह एक पूरी तरह से सोची और समझी साजिश है। उन्होंने यह भी कहा भगवान श्री कृष्ण को योगेश्वर कहा जाता है और भगवान श्री कृष्ण ही ने अपने आप को ईश्वर कहा है तो उनकी माया को तो हम नहीं बता सकते लेकिन यह कटु सत्य है कि भगवान श्री कृष्ण के मुकदमे को शुरू हुए अभी कुछ ही समय बीता था। वहां पर भी हमारे विरोधी पक्ष के लोग इलाहाबाद हाई कोर्ट पहुंच गए थे जिससे हमारे कितने साल बच गए और आज हमारा मुकदमा इलाहाबाद हाई कोर्ट पहुंच गया। और 16 तारीख को हम लोगों ने एक वाद दाखिल किया था सर्वे का कुछ ही दिनों में उसका भी आदेश आ गया। तो इससे पता चलता है की निश्चित तौर पर भगवान श्री कृष्ण का मामला है। तो भगवान श्री कृष्ण की मूर्ति को नहीं कहा जा सकता उनके मामले में हम कौन बोलने वाले हैं उनका जिस तरह से हम लोगों को आशीर्वाद मिल रहा है। इससे साफ पता चलता है कि बहुत चंद ही दिनों में भगवान राम मंदिर की तरह भगवान श्री कृष्ण जी का मंदिर मथुरा में बन जाएगा। आप लोगों को यह भी याद होगा जब हम लोगों का मुकदमा लिस्टेड नहीं हो रहा था। और जब हम लोगों का दीवानी में मुकदमा खारिज हुआ फिर हम ट्रेजरी में गए तो 6 दिसंबर को हम लोगों ने कार्यक्रम किया था। मथुरा में जिसमें हम लोगों को और हमारे तमाम मित्रों हफ्तो के लिए जेल जाना पड़ा था। लेकिन कुछ हाई जैकर्स ने उस मामले को हाईजैक करने की कोशिश किया लेकिन आपको बता दें हम लोगों को उसे चीज से कोई मतलब नहीं है। हम लोग जमीन पर ही काम किए हैं और जमीन पर ही काम करते रहेंगे। इसी के साथ-साथ उन्होंने देशवासियों को नव वर्ष की चैत्र मास में जो सनातन धर्म में मनाया जाता है। उस पर बहुत-बहुत शुभकामनाएं दी।

नये साल में पुलिस प्रशासन का विशेष अभियान

ड्रिंक एंड ड्राइव को लेकर माल पुलिस ने चलाया विशेष अभियान

निर्मल सैनी द अचीवर टाइम्स

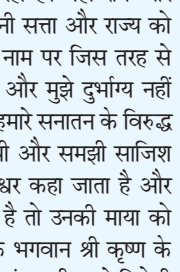

लखनऊ। माल थाना प्रभारी निरीक्षक राजेश कुमार त्रिपाठी ने नए साल में शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ ड्रिंक एंड ड्राइव विशेष जाँच अभियान चलाया। सड़क सुरक्षा के नियमों का पालन करने को लेकर माल पुलिस द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है।

देर रात चला अभियान

शराब पीकर वाहन चलाने वालों को खिलाफ माल इंस्पेक्टर राजेश कुमार त्रिपाठी ने देर रात लखनऊ -हरदोई बॉर्डर पर स्थित चेक पोस्ट पर औचक जांच अभियान चलाया।इंस्पेक्टर राजेश कुमार त्रिपाठी खुद जाँच अभियान के समय मौके पर उपस्थित रह कर मोटरिंग करते दिखे। कुछ वाहन चालक शराब पीकर वाहन चलाते पाए गए जिनको कड़ी हिदायत देकर छोड़ा गया।

पुलिस प्रशासन की अपील

इंस्पेक्टर राजेश कुमार त्रिपाठी ने बताया कि नववर्ष को देखते हुए लोग सुरक्षित वाहन चलाएं और नियमों का पालन करे। इसको लेकर जांच अभियान चलाया जा रहा है जो की निरंतर जारी रहेगा और लोगों से अपील भी की जा रही है कि नव वर्ष अच्छा से मनाए और शराब पीकर वाहन न चलाए।

जीवन सुरक्षा के लिए सदैव हेल्मेट पहनकर ही दो पहिया वाहन चलायें-विजयपाल आढती

❖ योगदान देने वाले लोगों को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेन्टो देकर विधायक द्वारा किया सम्मानित।

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। द्वितीय सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के समापन समारोह का आयोजन नगर पालिका परिषद हापुड़ में किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि विजयपाल आढती विधायक सदर हापुड़, विशिष्ट अतिथि मुख्य विकास अधिकारी अभिषेक कुमार, छवि सिंह, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी, (प्रशासन) हापुड़, रमेश कुमार चौबे, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी, (प्रवर्तन) हापुड, क्षेत्राधिकारी यातायात वरूण मिश्रा, आशुतोष कुमार उपाध्याय, यात्री व मालकर अधिकारी हापुड़, मौ0 दानिश कुरैशी, टी0आई0 उपदेश कुमार,? जयवीर सिंह पूर्व प्राचार्य डायट उपस्थित रहे। जिन लोगों द्वारा सडक सुरक्षा पखवाडा कार्यकम के अन्तर्गत अनवरत योगदान देने वाले लोगों को प्रशस्ति पत्र एवं मोमेन्टो देकर विधायक द्वारा सम्मानित किया। इनमें दानिश कुरैशी चेयरमैन ए0पी0 जे0 अब्दुल कलाम वेलफेयर सोसायटी हापुड़, कु0 गुलनाज, कु0 सायदा कार्डिनेटर डा0 ए0पी0 जे0 अब्दुल कलाम वेलफेयर सोसायटी हापुड़ को गुड सेमेरिटन, यातायात पुलिस विभाग हापुड़ से टी0एस0आई0 अमीर अहमद, टी0एस0आई0 बिजेन्द्र पाठक, हैड कांस्टेबिल मनोज कुमार, हैड कांस्टेबिल सचिन कुमार, कांस्टेबिल मोनू, उ0प्र0 राज्य सडक परिवहन निगम हापुड़ से युसुफ जैदी सीनियर फोनमैन, सुमनलता केन्द्र प्रभारी, सतेन्द्रपाल एवं लव कुमार, चिकित्सा विभाग हापुड़ से डा0 संजय राय चिकित्सा अधीक्षक, डा0 माहिर अहमद, डा0 प्रमोद तेवतिया चिकित्सक देवनंदिनी हॉस्पिटल हापुड़, शिक्षा विभाग हापुड़ से विपुल चौधरी एडमिनिस्ट्रेशन मोनार्ड यूनिवर्सिटी हापुड़, डा0 सुमन अग्रवाल प्रधानाध्यापिका शिवा प्राथमिक पाठशाला हापुड उपस्थित जनों को प्रशस्ति पत्र एवं प्रतीक चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। हापुड़ ऑटोमोबाईल डीलर एसोसिएशन के सहयोग से हेल्मेट वितरण का कार्यकम कराया गया, जिसमें बिना हेल्मेट के आये वाहन चालकों को विधायक एवं मुख्य विकास अधिकारी हापुड़ द्वारा हेल्मेट प्रदान किया गया तथा यह भी बताया गया कि जीवन सुरक्षा के लिए सदैव हेल्मेट पहनकर ही दोपहिया वाहन चलायें,अपनी तथा अपने परिवार की सुरक्षा करें। उक्त कार्यकम में एस0वी0आर0 मोटर्स के आशीष त्यागी, हीरो ग्लोब ऑटोमोबाईल के बलदेव सिंह, अनमोल ऑटोमोबाईल से सागर त्यागी, शिवा बजाज से राजेश, जे0के0एम0 से विशाल ने उपस्थित रहकर पूर्ण सहयोग किया। कार्यकम में स्काऊट गाईड एवं एन0सी0सी0 कैडेटस ने मार्च पास्ट कर हर सफर में सुरक्षा के प्रति लोगों को प्रेरित किया। इसके उपरांत मोटर साईकिल एवं स्कूटी रैली को विधायक द्वारा हरी झन्डी दिखाकर रवाना किया गया ।कार्यकम के अन्त में सड़क सुरक्षा की शपथ दिलायी गयी तथा रमेश कुमार चौबे, सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी (प्रवर्तन) हापुड़ द्वारा आये हुए अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यकम का संचालन सेवानिवृत्त डायट प्राचार्य जयवीर सिंह द्वारा किया गया।

नव वर्ष सभी को मंगलमय हो और जीवन में नई खुशियां लायेः जिलाधिकारी

❖ जाति-धर्म भूल कर एक-दूसरे के गले मिलकर नव वर्ष की बधाई दें:-एम0पी0 सिंह

❖ नये साल पर शान्ति व्यवस्था में खलल डालने वालों पर सख्त कार्यवाही की जायेगीः-एसपी

द अचीवर टाइम्स निशान्त शुक्ला

हरदोई। जिलाधिकारी मंगला प्रसाद सिंह ने जनपदवासियों को नव वर्ष 2024 की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि नव वर्ष आप सभी को मंगलमय हो और जीवन में नई खुशियां लाये। उन्होने जनपदवासियों से कहा कि नये वर्ष के आगाज पर जाति-धर्म को भूल कर देश की एकता की मिशाल दिखाते हुए नया साल धूमधाम से मनाये और एक दूसरे के गले मिलकर नव वर्ष की बधाई दें। पुलिस अधीक्षक केसी गोस्वामी ने जनपदवासियों के लिए मंगलकामना करने हुए कहा कि नये वर्ष का पर्व धूमधाम से मनायें पर शराब पीकर किसी प्रकार का हुड़दंग एवं स्टंटबाजी करने एवं शान्ति व्यवस्था में खलल डालने वालों पर सख्त कार्यवाही की जायेगी। नये वर्ष पर मुख्य विकास अधिकारी सौम्या गुरूरानी, अपर जिलाधिकारी प्रियंका सिंह, नगर मजिस्टेऊट प्रशान्त तिवारी तथा जिला सूचना अधिकारी संतोष कुमार ने भी जनपदवासियों को नये साल की हार्दिक बधाई देते हुए सभी के लिए मंगलकामना की हैं।

बड़ा गांव में पीएम आवास के लाभार्थियों का प्रधान पर आरोप

जेवर गिरवी रखकर बनाया आवास भैंस को गंवा दिया

❖ बड़ा गांव में लाभार्थियों का आरोप प्रधान द्वारा पी एम आवास योजना में बीस बीस हजार रुपए की अवैध वसूली की गई जेवर गिरवी रखकर बनाया आवास भैंस को गावा दिया।

द अचीवर टाइम्स फसाद खान

शाहजहांपुर। ब्लाक पुवायां की ग्राम पंचायत बड़ा गांव के पीड़ित ग्रामवासियों ने मीडिया को सूचना दी बही दिब्बयांग लाभार्थी का आरोप आवास तो मिला लेकिन कर्ज लेना पड़ा क्योंकि प्रधान अवनीश सैनी ने अपने मातहतों द्वारा बीस बीस हजार रुपए की अवैध वसूली कर ली कर्ज लेकर आवास का निर्माण कार्य पूरा कराया सरकार को सचिव ब प्रधान द्वारा शासन की मंशा पर पलीता लगाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी दर्जनों आपत्रों के पीएम आवास ग्राम प्रधान व संबंधितों के द्वारा स्वीकृत कराकर मोटी रकम वसूल की गई है स्वयं पीएम आवास के लाभार्थियों के द्वारा वीडियो में बताया गया है की ग्राम प्रधान द्वारा पहली किस्त में बीस हजार रूपए की अवैध तरीके से वसूल किए गए हैं। जिसमें कुछ लाभार्थियों ने वीडियो में बताया कर्ज लेकर निर्माण कार्य पूरा कराया इतना ही नहीं भैंस,बकरी,कुंडल आदि गवाना पड़े ग्राम प्रधान व सचिव , जो की पात्र गरीब बांचित लाभार्थी जोकि दर-दर भटक रहे हैं जो अपना गुजर बसर आज भी झोपड़ी डालकर कर रहे हैं लेकिन उनको आवास स्वीकृत नहीं कराया गया और जो अपात्र लोग जिनके मकान पहले से ही पक्का बना हुआ है कच्चे घर या खुले आसमान के नीचे जीवन यापन करने वालों को पीएम आवाज देने का प्रावधान किया गया है ग्राम प्रधान से लगाकर सरकारी अफसर में लाभार्थियों के सत्यापन में सारा खेल कर दिया है उनके बैंक खातों में आवास की रकम ट्रांसफर कर दी गई जिनके पक्के मकान वाले अमीर लोगों को भी आवास दे दिया गया है ग्रामवासियों ने उत्तर प्रदेश सरकार से जांच कराते हुए कठोर कार्यवाही को मांग की

वृक्ष है तो जल, जीवन और भविष्य हैः डॉ मुकेश सैनी

द अचीवर टाइम्स चेतन कुमार

हापुड़। एकेपी इंटर कॉलेज द्वारा एनएसएस कैंप ग्राम दौमयी में चल रहा है जिसमें रविवार को कार्यक्रम के द्वितीय दिवस में मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉक्टर मुकेश सैनी ने कहा कि हमारे जीवन में वृक्षों का अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान है जन्म से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के जीवन में लकड़ी का महत्व है चाहे वह कलम के रूप में हो चाहे किताब के रूप में जो पेपर का प्रयोग हम करते हैं वह सब हमें वृक्षों से ही मिलता है प्रकृति का संतुलन बनाने के लिए हमें अधिक से अधिक वृक्ष लगानी चाहिए । यदि वृक्ष नहीं होंगे तो बरसात नहीं होगी बरसात नहीं होगी तो सर्दी नहीं पड़ेगी गर्मी अधिक होगी जिसके कारण ग्लेशियर तेजी से पग लेंगे इन सब को संतुलित करने के लिए वृक्ष लगाना अत्यधिक जरूरी है भूमि का कटान रोकना है तो वृक्षों को लगाना होगा वृक्ष लगाने के साथ-साथ हमको उसे वृक्ष की देखरेख भी करनी चाहिए जब तक कि वह पौधा वृक्ष का रूप ना ले ले हमें उसकी देखरेख करनी चाहिए। इस अवसर पर उन्होंने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि मतदान दिवस के दिन अपने मत का प्रयोग अवश्य करें मत देने से हम अपने प्रिय नेता को जीत सकते हैं और सच्चे भारतीय होने का तथा जो अधिकार हमें संविधान ने दिया है अपना मत देकर हमें अपना कर्तव्य निर्भय करना चाहिए। ताकि सरकार अच्छी बने और हम लोगों को सही योजनाएं दे जिससे देश का विकास संभव हो । कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती के के चित्र के सममुख दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा सरस्वती वंदना स्वागत गीत संस्कृत कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए साथ ही स्कूल की प्रधानाध्यापक डॉक्टर स्नेहा प्रभा ने बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने का संदेश दिया तथा अतिथियों द्वारा इस अवसर पर पौधारोपण भी किया गया। इस अवसर पर एनएसएस प्रभारी जूली चौधरी,डॉक्टर अनीता जायसवाल,किशोरी लाल सैनी उपस्थिति रहे।

बड़े धूमधाम से निकाली गई अक्षत कलश यात्रा

द अचीवर टाइम्स- नीरज शुक्ला

रामनगर बाराबंकी। नगर पंचायत में रविवार को श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र अयोध्या जी से आए हुए पूजित अक्षत कलश यात्रा बड़े धूमधाम से निकाली गई। गाजे बाजे के साथ भगवान राम एवं उनके अन्यन भक्त हनुमान की सजी झांकी भगवान जय श्री राम के जयकारों के साथ पंचमुखी हनुमान मंदिर से प्रारंभ हुई पूजित अक्षत कलश यात्रा कस्बा रामनगर का भ्रमण करते हुए बुढ़वल चौराहे पर पहुंची इसके बाद पक्का तालाब स्थित हनुमान मंदिर होते हुए पक्का तालाब स्थित हनुमान मंदिर जाकर समाप्त हो गई। कस्बे में जगह-जगह लोगों ने कलश यात्रा पर पुष्प वर्षा कर स्वागत किया। तमाम महिलाएं बच्चे और पुरुष अपने घरों की छत से पुष्प वर्षा करते रहे। प्रदुमन बाजपेई प्रदीप सिंह अनंत राम यादव देवेंद्र मौर्य बंटी शुक्ला अश्वनी यादव आदि लोगों के द्वारा यात्रा का जोरदार स्वागत किया गया। यात्रा में मुख्य रूप से जिला प्रचारक सुदीप विभाग संगठन मंत्री इंद्रेश विभाग मंत्री डॉ राजेंद्र प्रसाद जिला मंत्री राहुल कुमार खंड संघ चालक सुभाष ओझा सह खंड संघ चालक प्रदीप खंड कार्यवाह शिवनारायण खंड प्रचारक अमन पूर्व विधायक शरद अवस्थी जिला पंचायत सदस्य प्रतिनिधि नानमून शुक्ला मंडल अध्यक्ष कमलेश शुक्ला व्यापार मंडल अध्यक्ष रविकांत पांडे विश्व हिंदू परिषद के पदाधिकारी राष्ट्रीय स्वयं संघ के पदाधिकारी सहित भारी संख्या में मौजूद रहे। इस दौरान स्थानीय पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा के चाक चौबंद इंतजाम किए गए थे। ज्ञात हो कि 1 जनवरी से 15 जनवरी तक प्रत्येक परिवार में श्री राम जन्मभूमि से आये पूजित अक्षत एवं मंदिर का आमंत्रण पत्र घर-घर पहुंचाया जाना है इसी परिपेक्ष में यह अक्षत पूजित कलश यात्रा निकाली गई है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की जन्मस्थली अयोध्या धाम में हुआ भव्य स्वागत

प्रधानमंत्री ने 15 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा विकास परियोजनाओं की दी सौगात

संवाददाता

अयोध्या। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि अयोध्या जी के सभी लोगों को मेरा प्रणाम। आज पूरी दुनिया उत्सुकता के साथ 22 जनवरी के ऐतिहासिक क्षण का इंतजार कर रही है, ऐसे में अयोध्यावासियों में ये उत्साह ये उमंग बहुत स्वाभाविक है। भारत की मिट्टी के कण कण और भारत के जन-जन का मैं पुजारी हूं और मैं भी आपकी तरह उतना ही उत्सुक हूं। हम सभी का यह उत्साह ये उमंग थोड़ी देर पहले अयोध्या की सड़कों पर भी पूरी तरह नजर आ रहा, ऐसा लगता था कि पूरी अयोध्या नगरी ही सड़क पर उतर आयी हो। ये प्यार ये आशीर्वाद के लिए मैं आप सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं। मेरे साथ बोलिए सियावर रामचंद्र की, सियावर रामचन्द्र की जय। प्रधानमंत्री जी के नवनिर्मित हवाई अड्डे पर पहुंचने पर राज्यपाल श्रीमती आनंदीबेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं केन्द्रीय मंत्री

ज्योतिरादित्य सिंधिया, जनरल बी0के0 सिंह, सांसद लल्लू सिंह आदि ने स्वागत किया। प्रधानमंत्री जी अपने निर्धारित कार्यक्रम के तहत नवनिर्मित अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि वाल्मीकि हवाई अड्डा पर उतरे तथा उसके तत्काल बाद 16 किमी0 तक रोड शो एवं अगले चरण में अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का लोकार्पण किया तथा वंदे भारत व अमृत भारत टेऊन को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। उक्त अवसर पर राज्यपाल, मुख्यमंत्री, केन्द्रीय मंत्री अश्विनी वैष्णव एवं सांसद लल्लू सिंह आदि मौजूद थे। शहर के रोड शो में प्रधानमंत्री जी का भव्य स्वागत किया गया तथा आमजनों में विशेष उत्साह था तथा प्रधानमंत्री जी ने धर्म पथ, राम पथ, राम जन्मभूमि पथ आदि का अवलोकन किया तथा लोगों का अभिवादन किया तथा प्रधानमंत्री आवास के राजघाट मोहल्ले के लाभार्थियों से मुलाकात की एवं उनके आवास के विकास के बारे में जानकारी ली। जिसमें लाभार्थियों ने मुक्त कंठ से प्रधानमंत्री जी की तथा इस योजना की तथा सरकार की एवं अधिकारियों की सराहना की। प्रधानमंत्री जी अगले चरण में पुनः हवाई अड्डे पर पहुंचकर हवाई अड्डे का लोकार्पण किया। यह अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा महर्षि वाल्मीकि के नाम पर किया गया जो आदि रामायण वाल्मीकि रामायण के रचयिता और त्रेतायुग के महान ऋषियों में एक थे। इस अवसर पर राज्यपाल श्रीमती आनन्दी बेन पटेल, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी, केन्द्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, अश्विनी वैष्णव, जनरल बी0के0 सिंह, उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य और उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक, प्रदेश भाजपा अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी, प्रभारी मंत्री सूर्य प्रताप शाही, पीडब्ल्यूडी मंत्री जितिन प्रसाद, पर्यटन मंत्री जयवीर सिंह, अयोध्या सांसद लल्लू सिंह, जिला पंचायत अध्यक्ष श्रीमती रोली सिंह, एमएलसी डा0 हरिओम पांडेय, विधायक वेद प्रकाश गुप्ता, डा0 अमित सिंह चौहान, रामचन्द्र यादव, जिलाध्यक्ष संजीव सिंह, महानगर अध्यक्ष कमलेश श्रीवास्तव, केन्द्रीय सरकार के नगर विमान एवं सचिव, उ0प्र0 सरकार के मुख्य सचिव, अपर मुख्य सचिव सहित प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री संजय प्रसाद, मण्डलायुक्त गौरव दयाल, पुलिस महानिदेशक पीयूष मोर्डिया, पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार, सूचना निदेशक शिशिर, जिलाधिकारी नितीश कुमार, वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरन नैय्यर, नगर आयुक्त विशाल सिंह सहित भाजपा के पदाधिकारीगण भी उपस्थित थे। इसके बाद मा0 प्रधानमंत्री जी ने लोकप्रिय सांसद लल्लू सिंह द्वारा आयोजित रैली में भाग लिया। इस अवसर पर भारतीय जनता पार्टी के अनेक वरिष्ठ नेता, गणमान्य व्यक्ति ने सम्बोधित किया। इस अवसर पर मा0 प्रधानमंत्री जी ने सभी का अभिवादन किया तथा अपने सम्बोधन में कहा कि अयोध्या का नया विकास नये अध्याय का सृजन कर रहा है तथा आज का दिन देश के इतिहास में 30 दिसम्बर की ये तारीक बहुत ही ऐतिहासिक रही है आज के ही दिन 1943 में नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने अण्डमान में झंडा फहराकर भारत की आजादी का जयघोष किया था। आजादी के आंदोलन से जुड़े ऐसे पावन दिवस पर आज हम आजादी के अमृतकाल के संकल्प को आगे बढ़ा रहे है। आज विकसित भारत के निर्माण को अयोध्या नगरी से नई ऊर्जा देंगे आज यहां 15 हजार करोड़ से ज्यादा के विकास कार्यों का शिलान्यास/लोकार्पण हुआ। आधुनिक अयोध्या को देश के नक्शे पर फिर से गौरव के साथ स्थापित करेंगे। कोरोना जैसी वैश्विक महामारी के बीच यह कार्य अयोध्यावासियों के अथक परिश्रम का परिणाम है मैं सभी अयोध्या वासियों को इन परियोजनाओं के लिए अनेक अनेक बधाई देता हूं। मेरे परिवारजनों दुनिया में कोई भी देश हो अगर उसे विकास की नई ऊंचाई पर पहुंचना है तो उसे अपनी विरासत को संभालना ही होगा। हमारी विरासत हमें प्रेरणा देती है हमें सही मार्ग दिखाती है इसलिए आज का भारत पुरातन और नूतन दोनों को आत्मसात करते हुये आगे बढ़ रहा है। अयोध्या नगरी की इस पुरातन पहचान को हमें आधुनिकता से जोड़कर वापस लाना है साथ क्यों आने वाले समय में अयोध्या नगरी अवध क्षेत्र ही नहीं बल्कि पूरे यूपी के विकास को यह हमारी अयोध्या दिशा देने वाली है अयोध्या में श्री राम का भाव मंदिर बनने के बाद यहां आने वाले लोगों की संख्या में बहुत बड़ी वृद्धि होगी इसे ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार अयोध्या में हजारों करोड़ रूपों के विकास कार्य कर रही है अयोध्या को स्मार्ट बन रही है आज अयोध्या में सड़कों का चैड़ीकरण हो रहा है नए फुटपाथ बना रहे हैं आज अयोध्या में नए ओवरब्रिज बना रहे हैं नए पुल बना रहे हैं अयोध्या को आसपास के जिलों से जोड़ने के लिए भी यातायात के साधनों को सुधारा जा रहा है साथियों आज मुझे अयोध्या धाम एयरपोर्ट और अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन का लोकार्पण करने का सौभाग्य मिला है मुझे खुशी है कि अयोध्या एयरपोर्ट का नाम महर्षि वाल्मीकि के नाम पर रखा गया है, महर्षि वाल्मीकि ने हमें रामायण के माध्यम से प्रभु श्री राम के कृतित्व एवं चरित्र से परिचय करवाया। प्रधानमंत्री ने अपने सम्बोधन में कहा कि मकर संक्रांति के दिन से पूरे देश के छोटे-मोटे सब तीर्थ स्थलों पर स्वच्छता का एक बहुत बड़ा अभियान चलाया जाना चाहिए हर मंदिर हिंदुस्तान के हर कोने में हमें उसकी सफाई का बयान मकर संक्रांति 14 जनवरी से 22 जनवरी तक हमें चलना चाहिए। आजकल कुछ लोग मुझसे पूछते हैं कि मोदी की गारंटी में इतनी ताकत क्यों है मोदी की गारंटी में इतनी ताकत इसलिए है क्योंकि मोदी जो कहता है वह करके देने के लिए जीवन खपा देता है मोदी की गारंटी पर आज देश को इसलिए भरोसा है क्योंकि मोदी जो गारंटी देता है उसे पूरा करने के लिए दिन-रात एक कर देता है यह अयोध्या नगरी भी तो इसकी साक्षी है और मैं आज अयोध्या के लोगों को फिर से विश्वास दूंगा इस पवित्र धाम के विकास में हम कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे।

एक नज़र

महिला को निर्वस्त्र कर पूरे गांव में दौड़ाकर पीटा, पति-देवर ने दहेज के लिए की दरिंदगी

संवाददाता

गोरखपुर। आरोप है कि हरपुर बुदहट थाने पर पीड़िता ने कई बार शिकायत की, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीड़िता ने एसएसपी से गुहार लगाई। एसएसपी के निर्देश पर पुलिस दहेज उत्पीड़न, मारपीट समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर जांच कर रही है। गोरखपुर के सहजनवां इलाके के एक गांव में विवाहिता को पति व देवर ने गांव में निर्वस्त्र कर पीटा। आरोप है कि दहेज की मांग पूरी न होने पर मारपीट कर गला दबाकर हत्या की भी कोशिश की गई। एसएसपी के निर्देश पर पुलिस दहेज उत्पीड़न, मारपीट समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज कर जांच कर रही है। विवाहिता ने तहरीर में लिखा है कि उसकी दूसरी शादी हरपुर बुदहट थाना क्षेत्र में हुई है। उसके दो बच्चे भी हैं। शादी के बाद पति व देवर उसे और बच्चे को मारते-पीटते थे। आरोप है कि पति व देवर ने गला दबाकर मारने की कई बार कोशिश की। दोनों ने निर्वस्त्र कर पूरे गांव में दौड़ाकर पीटा और घर से निकाल दिया। आरोप है कि हरपुर बुदहट थाने पर कई बार शिकायत की गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। पीड़िता ने एसएसपी से गुहार लगाई। एसएसपी के निर्देश पर सहजनवां पुलिस ने पति व उसके भाई के खिलाफ दहेज उत्पीड़न, मारपीट समेत अन्य धाराओं में केस दर्ज किया है।

गीता प्रेस भी बनेगा राम मंदिर उद्घाटन-प्राण प्रतिष्ठा का साक्षी, श्रद्धालुओं को मिलेंगी अयोध्या दर्शन पुस्तक

गोरखपुर। आगामी 24 जनवरी 2024 को अयोध्या में प्रधानमंत्री मोदी श्री राम मंदिर और मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होकर अपने हाथों से मंदिर का उद्घाटन करेंगे। कार्यक्रम के दौरान प्रसाद वितरण के साथ ही गीता प्रेस में प्रकाशित अयोध्या दर्शन पुस्तक के साथ ही अन्य पुस्तक वहां आए श्रद्धालुओं और अति विशिष्ट लोगों के बीच बांटी जाएंगी। आगामी 22 जनवरी 2024 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हाथों अयोध्या में श्री राम मंदिर उद्घाटन और प्रभु राम की मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा की जाएगी इस गौरवमयी और ऐतिहासिक पल का साक्षी बनेगा गोरखपुर में स्थापित विश्व विख्यात गीता प्रेस। क्योंकि कार्यक्रम के पश्चात प्रसाद वितरण के साथ बाटी जाएंगी यहां से प्रकाशित हजारों पुस्तकें।

राम मंदिर उद्घाटन और प्राण प्रतिष्ठा का साक्षी बनेगा गीता प्रेस

देश एवं दुनिया की नजरें अयोध्या में होने वाले प्रभु श्री राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह पर टिकी हुई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में हिस्सा लेंगे इस अवसर पर प्रधानमंत्री राम मंदिर में प्रभु श्री राम की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करेंगे, इस समारोह को और खास बनाने में गोरखपुर का विश्व प्रसिद्ध गीता प्रेस भी अपना योगदान दे रहा है। प्राण प्रतिष्ठा समारोह में मंदिर ट्रस्ट को गीता प्रेस द्वारा छापी जा रही अयोध्या दर्शन की 10 हजार प्रतियां उपहार स्वरूप दी जाएगी। यह पुस्तक प्राण प्रतिष्ठा समारोह में श्री राम ट्रस्ट के अतिथियों को प्रसाद के साथ किताबें भी दी जाएंगी। इसके साथ ही यहां आए विशिष्ट अतिथियों को अन्य किताबें भी भेंट स्वरूप दी जाएगी। इन किताबों में प्रभु श्री राम के बारे में चित्रों के माध्यम से श्रद्धालुओं को जानने का एक बेहतरीन मौका मिलेगा।

गीता प्रेस के ट्रस्टी देवी दयाल का क्या कहना है

गीता प्रेस के ट्रस्टी देवी दयाल अग्रवाल ने बताया कि प्रभु श्री राम के प्राण प्रतिष्ठा का यह अलौकिक कार्यक्रम सदियों बाद प्रभु राम के अपने स्थान पर पुनः प्रतिष्ठित होने की खुशी में गीता प्रेस प्रबंधन ने तय किया कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह में उपस्थित होने वाले अतिथियों एवं अति विशिष्ट अतिथियों को प्रसाद एवं उपहार स्वरूप गीता प्रेस में छपी किताबें भेट की जाएगी। यह गीता प्रेस सहित पाठकों के लिए गौरव का विषय होगा।

गीता प्रेस के प्रबंधक बोले हम सभी के लिए बेहद गौरवशाली पल

गीता प्रेस के प्रबंधक लाल मणि तिवारी ने बताया कि यह हमारा परम सौभाग्य है कि गीता प्रेस में छपी ÷अयोध्या दर्शन÷ की किताबें राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में प्रसाद के साथ वितरित की जाएगी लगभग 10 हजार श्रद्धालुओं को यह किताबें मिलेगी जिससे अयोध्या के विषय में श्रद्धालुओं को पूरी जानकारी मिल सकेगी। उन्होंने कहा कि गीता प्रेस प्रभु श्री राम से पहले से जुड़ा हुआ है, उनसे संबंधित बहुत सी किताबें यहां पर प्रकाशित की जा चुकी है। लेकिन इस वर्ष राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा को देखते हुए 1972 में प्रकाशित श्री रामांक का पुनः प्रकाशन कर रहे हैं, और इसमें पहले की तुलना में अधिक रंगीन चित्रों के माध्यम से जानकारी मिल सकेगी। यह पल पूरे गीता प्रेस प्रबंधन सहित सभी धर्म प्रेमी और पाठकों के लिए एक बड़े ही सम्मान और गौरव की बात होगी।

कलेक्टर के रक्तदान की अपील पर आगे आए लोग, हुआ 249 यूनिट रक्तदान

नगर निगम कार्यालय के प्रवेश द्वार पर लगी एल.ई.डी स्क्रीन पर हो रहा है ब्लड का ग्रुपवार उपलब्धता का प्रदर्शन

द, अचीवर टाइम्स पप्पू उपाध्याय

मध्य प्रदेश कटनी। रक्तदान के माध्यम से पीडित मानवता की सेवा हेतु लोगों को जागरूक कर अधिक से अधिक लोगों द्वारा रक्तदान करने के कलेक्टर के रक्तदान महादान प्रकल्प में भागीदारी की कलेक्टर अवि प्रसाद की अपील का सकारात्मक असर हुआ है। कटनी वसियों ने कलेक्टर की अपील के बाद अब तक 249 यूनिट रक्त दान कर जरूरतमंदों की सेवा के लिए योगदान दिया है। बीते 23 दिसंबर को कलेक्टर श्री प्रसाद की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में कटनी के संगठनों, राजनैतिक दलों, स्वयंसेवी संगठनों, चिकित्सकों, सी.ए, मीडिया कर्मियों, समाजसेवियों और शिक्षाविदों ने इस नेक पहल की सराहना करते हुए जरूरमंदों की जिंदगी बचाने के इस प्रकल्प में आगे बढ़कर हांथ बंटाने का सामूहिक वचन दिया था। सभी ने इस पुण्य कार्य के प्रणेता और सूत्रधार कलेक्टर श्री प्रसाद की सराहना करते हुए रक्तदान करने का संकल्प दोहराया था। बैठक के दौरान कलेक्टर अवि प्रसाद द्वारा जिला चिकित्सालय मे उपलब्ध ब्लड की ग्रुपवार जानकारी का विवरण नगर के सुगम स्थल में करानें की जानकारी दिये जाने के लिए डिस्प्ले सक्रीन बोर्ड की व्यवस्था करने की जानकारी दी इस पर उपस्थित समस्त जनों द्वारा उक्त प्रस्ताव का करतल ध्वनि से स्वागत किया गया था। बैठक में कलेक्टर श्री प्रसाद द्वारा दिये गए निर्देश के बाद नागरिकों की सुविधा और जरूरतमंदों के लिए जिला चिकित्सालय अस्पताल के ब्लड बैंक में ब्लड ग्रुपवार रक्त की उपलब्धता की जानकारी अब लोग बिना अस्पताल गये नगर निगम कार्यालय के प्रवेश द्वार कमांक 1 में लगी एल.ई.डी स्क्रीन में जिला चिकित्सालय में ग्रपवार रक्त की उपलब्धता एवं शिविरों के दौरान रक्तदान करने वाले रक्तदाताओ का नाम भी प्रसारित किया जा रहा है।

पुलिस मुठभेड़ में दो बदमाशों को लगी गोली

12 लाख रुपये की लूट में थे वांछित

संवाददाता

गोरखपुर। गोरखपुर जिले में बेलीपार पुलिस ने मुठभेड़ में दो बदमाशों को गोली मारी है। दोनों घायलों को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। गोरखपुर जिले में बेलीपार पुलिस ने मुठभेड़ में दो बदमाशों को गोली मारी है। दोनों घायलों को इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज में भर्ती किया गया है, जहां उनका इलाज चल रहा है। बताया जा रहा है कि ये बदमाश 12 लाख रूपये की लूट में वंचित थे। पुलिस को कई दिनों से इनकी तलाश थी। बदमाशों की पहचान राज पंडित उर्फ गोविन्द उपाध्याय पुत्र त्रियुगी उपाध्याय निवासी पगार थाना बांसगांव जनपद गोरखपुर, शुभम पाण्डेय पुत्र बेरुडिहा निवासी थाना बांसगांव जनपद गोरखपुर के रुप में हुई है। इनके पास से 0.315 बोर का एक अवैध तंमचा, एक खोखा व एक जिन्दा कारतूस, एकअवैध पिस्टल, 01 खोखा व 01 जिन्दा कारतूस बरामद हुआ है।

बर्फीली पछुआ हवाओं ने बढ़ाई गलन कोहरे की चादर में लिपटा रहा शहर

संवाददाता

गोरखपुर। बर्फीली पछुआ हवाओं की वजह से अब कड़ाके की ठंड पड़ने लगी है। वहीं, कोहरे की वजह से दिन में भी रात सी गलन का अहसास होता रहा। शनिवार को शहर कोहरे की चादर से ढका रहा। धूप के दर्शन नहीं हुए। ऐसे में पहाड़ों से आ रही पछुवा हवा को अपना प्रभाव दिखाने का मौका मिल गया, नतीजा गलन बढ़ती चली गई। पूरे दिन लोग ठिठुरते रहे। शनिवार को दिन की शुरुआत कोहरे के साथ हुई। दिन चढ़ने के बावजूद मौसम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। शनिवार को लगातार दूसरे दिन अधिकतम तापमान 16 डिग्री सेल्सियस से नीचे रहा। शुक्रवार को अधिकतम तापमान में नौ डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई थी। शनिवार को भी यह बरकरार रही। शुक्रवार का तापमान 15.8 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड हुआ था, जो शनिवार को दशमलव चार डिग्री गिरकर 15.4 डिग्री पर टिका रहा। शनिवार को अधिकतम तापमान सामान्य से सात डिग्री कम रिकॉर्ड किया गया। वहीं, न्यूनतम तापमान में बीते दिन के मुकाबले करीब डेढ़ डिग्री सेल्सियस की गिरावट दर्ज की गई। यह 12.8 डिग्री सेल्सियस से गिरकर 11.4 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। मौसम विज्ञानी शफीक सिद्दीकी ने बताया कि पश्चिमोत्तर के पहाड़ों पर पश्चिमी विक्षोभ सक्रिय है और वहां वर्षा व बर्फबारी की आशंका बनी हुई है। ऐसे में गोरखपुर सहित समूचे उत्तर प्रदेश में गलन भरी ठंड का सिलसिला जारी रहने का पूर्वानुमान है। मौसम विज्ञानी के अनुसार अगले दो से तीन दिन तक अधिकतम तापमान 20 डिग्री सेल्सियस के नीचे ही रहेगा जबकि न्यूनतम तापमान के 10 से 11 डिग्री सेल्सियस रहने के आसार हैं। सुबह से दोपहर तक चल रही पुरवा हवा के चलते कोहरा बना रहेगा और दोपहर बाद आठ से 10 किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से चलने वाली पुरवा हवा गलन भरी ठंड को बनाए रखने का क्रम जारी रखेगी।

सूर्यकुण्ड में आयोजित हुआ विकसित भारत संकल्प यात्रा कार्यक्रम

सांसद रेखा अरूण वर्मा रही मुख्य अतिथि

प्रभाकर शुक्ला

महोली (सीतापुर) - शनिवार को इलाके के ग्राम सूर्यकुण्ड में विकसित भारत संकल्प यात्रा के तहत कार्यक्रम आयोजित हुआ। जिसमें सांसद रेखा अरुण वर्मा मुख्य अतिथि रहीं। उन्होंने इस दौरान भाजपा सरकार की योजनाओं के बारे में बताया। 2014 से देश को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व देश को विकास की गति मिली है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के एक नेता कहते थे कि केंद्र सरकार से एक रुपया भेजा जाता है, वह लाभार्थी तक 10 पैसे ही पहुंचता है। आज कांग्रेस के नेता की बात सत्य नजर आती दिख रही है कि कांग्रेस के एक सांसद के घर पांच सौ करोड़ रुपया बरामद हुआ है। यह बीच का पैसा कांग्रेस सरकार में बैठे लोगों के जेब में जाता था। जनता की खुशहाली से ही भारत 2047 तक विकसित राष्ट्र बनेगा। प्रधानमंत्री जी का मानना है कि जब जनता लाभान्वित और खुशहाल होती है तभी देश आगे बढ़ता है। जो लोग अब तक इन योजनाओं का लाभ नहीं पा सके हैं उनके लिए अलग-अलग काउंटर बनाए गए हैं जहां वह अपना रजिस्ट्रेशन करा सकते हैं। सांसद रेखा अरुण वर्मा ने अपनी ग्राम सभा में अच्छे कार्य करवाने के लिए प्रधान अतुल मिश्रा को प्रसंसा पत्र सौंपा। वहीं सांसद द्वारा उज्ज्वला गैस, किसान सम्मान निधि व घरौनी का वितरण किया गया। इस दौरान सांसद द्वारा प्रधान अतुल मिश्रा को सम्मानित किया गया। उपजिलाधिकारी अभिनव कुमार यादव व बीडिओ प्रतीक सिंह द्वारा सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन भाजपा नेता मनोज मिश्रा ने किया। इस दौरान नैमिष रत्न तिवारी, तरुण शुक्ला, प्रमुख मिथिलेश यादव, मंडल अध्यक्ष रजनीश, मनोज मिश्रा, प्रधान अतुल मिश्रा, रुद्र प्रताप सिंह, सर्वेश मिश्रा आदि मौजूद रहे।

सूदखोरों ने 50 हजार देकर वसूले 10 लाख, फिर घर में घुसकर महिला को मारा और कीमती सामान उठा ले गए

गोरखपुर। गोरखपुर और पूर्वांचल के क्षेत्र में सूदखोरी का धंधा चरम पर है। लोग कम पैसे देकर अधिक से अधिक रुपए वसूलने का काम कर रहे हैं। जिसकी वजह से कई परिवार प्रताड़ित हो रहे हैं। ऐसा ही एक मामला रामगढ़ ताल थाना क्षेत्र में आया है, जहां एक महिला को खेत की रोपाई के लिए ?50000 की जरूरत थी, उसने किसी से उधार लिए आरोप है कि सूदखोरों द्वारा उससे जबरन 10 लाख रुपए वसूल लिए गए है।बावजूद वह कर्ज मुक्ति नहीं हुई है ।पुलिस मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन कर रही है। गोरखपुर में सूदखोरों द्वारा महिला के घर में घुसकर मारपीट की गई। लूटपाट कर कीमती गहने और सामान उठा ले गए। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

अयोध्या की सड़कों पर मोदी का हुआ अभूतपूर्व स्वागत साधु संतों ने भी की पुष्पवर्षा

- मोदी की मुस्कान पर फिदा हुई अयोध्या
- कड़ाके की ठंड में भी न डिगा विश्वास, लोग बोलेः मोदी है तो मुमकिन है
- गुलाब की पंखुड़ियों संग अयोध्या का हर दिल बोला मोदी-मोदी
- साधु-संतों से लेकर सड़कों पर खड़े जनमानस ने प्रधानमंत्री को सिर-आंखों पर बिठाया।
- शीश झुकाकर मोदी ने किया अयोध्यावासियों का अभिवादन।
- राह में सांस्कृतिक कार्यक्रम, शंखनाद से हुआ भव्य स्वागत

संवाददाता

अयोध्या। कड़ाके की ठंड भी अयोध्यावासियों का हौसला न डिगा सकी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दीदार को समूची अयोध्या उमड़ पड़ी। रामनगरी में अभूतपूर्व स्वागत स्वागत से अभिभूत नरेंद्र मोदी ने भी शीश झुकाकर अयोध्यावासियों का अभिवादन किया। आलम यह रहा कि मोदी की मुस्कान पर फिदा रामनगरी ने गुलाब की पंखुड़ियों संग उनका स्वागत किया और मोदी-मोदी की गूंज से अयोध्या को गुंजायमान कर दिया। रास्तों में लगे फूलों की खुशबू में भी आज अलग ही महक थी, क्योंकि अयोध्या के पुनर्विकास के नायक खुद यहां मौजूद रहे।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के आगमन को लेकर अलग ही उमंग अयोध्या वासियों के मन में था। बच्चों हो या बुजुर्ग, महिलाएं हों या युवतियां, सभी पीएम मोदी की एक झलक पाने को आतुर दिखीं। धर्मपथ से लेकर राम पथ होते हुए अयोध्या धाम रेलवे स्टेशन पहुंचने के दौरान बच्चे भी जय जय श्री राम के साथ मोदी-मोदी की गूंज करते रहे। पीएम मोदी ने भी बच्चों को निराश नहीं किया। वे भी यहां के लोगों का अभिवादन करते रहे।

मोदी को देख खिल उठे अयोध्या के जनमानस के चेहरे

रोड शो में पीएम मोदी के चेहरे पर मुस्कान रही, जिसने समूचे अयोध्यावासियों का दिल जीत लिया। मोदी की मुस्कान पर फिदा अयोध्या में मोदी-मोदी की गूंज सुनाई दी। अयोध्या की सड़कों पर मोदी का यह स्वागत और भी महत्वपूर्ण हो गया, क्योंकि इसके बाद मोदी जब आएंगे तो रामलला को उनके दिव्य-भव्य मंदिर में विराजमान करेंगे।

लता चौक पर साधु-संतों ने की पुष्पवर्षा

यूं तो पूरे रोड शो के दौरान पीएम पर जोरदार पुष्पवर्षा हुई, लेकिन लता चैक पर भी साधु-संतों ने पीएम मोदी पर पुष्पवर्षा भी की और उन्होंने आशीर्वाद भी दिया। अयोध्या की नई पहचान बन चुके लता चौक पर भी आम जनमानस की भीड़ ने जोरदार स्वागत किया। यहीं से पीएम अयोध्या रेलवे स्टेशन के लिए मुड़े तो यहां फूलों से बनी गणपति की छवि काफी आकर्षित कर रही थी। वैसे, आज अयोध्या का श्रृंगार काफी अद्भुत था। जिसने भी देखा, यह श्रृंगार देख मनमोह उठा। रास्ते-रास्ते में बने तोरण द्वार और संत-साधु और आमजन ने अपने मन में भी मोदी को बसा लिया।

सिंगली में सुबह से पसर जाती है खौफ की चादर

शाम चार बजते ही लग जाता है कर्फ्यू

संवाददाता

देहरादून। नौकरी-पेशा लोग शाम को घर नहीं लौट पाते। घटना के बाद से गांववालों की जिंदगी शाम चार बजे ही थम जाती है। आखिर ऐसा कब तक चलेगा? अपने कलेजे के टुकड़े को गंवाने के बाद सिंगली गांव गम से उबर नहीं पा रहा है। गुलदार के हमले में ढाई साल के मासूम आयांश की मौत के बाद से घर में चूल्हा बुझा पड़ा है। घर के बाहर ग्रामीणों से लेकर रिश्तेदारों व करीबियों का जमावड़ा लगा है। पास के खाली पड़े प्लॉट में वन विभाग की टीम बैठी है जिसकी नजर पिंजरों पर है। आयांश के दादा मदन के पास ग्रामीणों की भीड़ बैठी है। उसकी मां चंदा के पास महिलाओं का समूह बैठा है। यहां बैठे लोगों और महिलाओं में बच्चे को खोने का जितना गम है उतना ही रोष भी है। रोष है वन विभाग की कार्यप्रणाली पर। सब एक सुर में यही कह रहे थे कि मंगलवार की रात हादसा हुआ और अब तक वन विभाग खाली हाथ है। टीम पिंजरे में गुलदार के आने का इंतजार कर रही है और गुलदार कई बार दिख चुका है।

शौच भी नहीं जा रहे लोग

ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि शाम को 4 बजते ही गांव में कर्फ्यू लगा दिया जाता है। वन विभाग की टीम ग्रामीणों को घरों में कैद कर देती है।

जंगल में है आयांश का घर

गल्जवाड़ी से घने जंगलों के रास्ते आगे करीब दो किमी चलने के बाद मुख्य मार्ग पर एक मंदिर है। यहां से करीब 700 मीटर निचले रास्ते पर जंगलों के बीच ऊंचे चबूतरे पर आयांश का घर है। तीन छोटी सीढ़ियां चढ़ने पर आयांश के घर में दाखिला होता है। आयांश की दादी पूनम के आंसू सूख चुके हैं लेकिन उनकी सिसकियां साथ नहीं छोड़ रही हैं। दादी बताती हैं कि मेरा पोता आयांश मंगलवार की रात इन्हीं सीढ़ियों पर था। वह मां के साथ कमरे में सोने जा रहा था, पर घर के बाहर भरपूर रोशनी थी। सामने लगे पोल में भी लाइट जल रही थी। आयांश ने अपनी मां से कहा, मम्मा आप चलो, मैं आ रहा हूं। दोनों निकलकर अंदर कमरे में जा रहे थे, तभी घात लगाकर आए गुलदार ने आयांश को सीढ़ियों से उठा लिया। मौसी सुनीता कहती हैं कि रात में गुलदार बच्चे के पास ही था। हमारा तो बच्चा गया, अब गुलदार बचना नहीं चाहिए। सरकार वन विभाग के अफसरों को गुलदार को मारने की अनुमति दे।

इसके कारण गांव के बच्चे असुरक्षित हैं।

सुबह सतीश के घर के पास दिखा गुलदार, शाम को फिर नजर आया

परिवार की सदस्य सुनीता प्रकाश बताती हैं कि गुलदार कहीं गया नहीं है, वह घर के इर्द-गिर्द अब भी घूम रहा है। वारदात के बाद से लगातार गांव के लोगों को यह नजर आ रहा ह । बृहस्पतिवार सुबह 5 बजे पड़ोस में स्थित सतीश के घर के पास उसे देखा गया। इस घर में तीन परिवार रहते हैं जिनमें कई बच्चे भी हैं। बृहस्पतिवार को ही शाम 4 बजे गांव के पूनम और दीपक ने गुलदार को घर के पास देखा गया। आसपास के इलाके से भी जो लोग मिलने आ रहे हैं, उनमें से कई को गुलदार नजर आ चुका है। दादा मदन बताते हैं कि गुलदार के पगमार्क लगातार घर के आसपास मिल रहे हैं। बड़े फुटमार्क के अलावा छोटे पगमार्क भी देखे गए हैं। इससे यह प्रतीत हो रहा है कि गुलदार के साथ उसके बच्चे भी हैं। इसीलिए गुलदार इस इलाके को छोड़ नहीं रहा है।

बच्चों को दूसरे रास्ते भेज रहे विद्यालय

आयांश के चाचा अभिलाष बताते हैं कि गांव में खतरा अभी टला नहीं है। गुलदार के डर से गांव में हर किसी की जिंदगी ठहर गई है। सबसे ज्यादा खतरा बच्चों को है। बच्चों को स्कूल न भेजें तो पढ़ाई प्रभावित होती है। मजबूरन पास के गांव गज्लवाड़ी और गुलियान स्थित इंटर कॉलेज में बच्चों को जंगल के रास्ते भेजना पड़ रहा है। कई बच्चे एक साथ दल बनाकर स्कूल जा रहे हैं।

कई लोग एकसाथ होते तब लौटते हैं गांव

घटना के बाद से गांव के लोगों के रोजी रोजगार भी प्रभावित हो गए हैं। गांव के अधिकांश लोग जबकि कई लोग आसपास के संस्थानों में गार्ड की नौकरी करते हैं। इन सभी लोगों को देर शाम लौटना होता है। गुलदार की दहशत के बाद यह सभी लोग डरे हुए हैं। साइकिल से अकेले वापस लौटना इनके लिए खतरों से भरा है। ग्रामीण बताते हैं, शाम को पांच-सात लोग एकसाथ हो जाते हैं, तब वह शहर से सिंगली वापस लौटते हैं।

रात में एकसाथ सोते कई परिवार

आयांश की नानी बामो देनी कहती हैं, सिंगली में पहली बार ऐसी कोई घटना हुई है। इससे पहले गुलदार कुत्ते को तो ले गया, लेकिन बच्चे को ले जाने की घटना पहली बार हुई है। यहां जाल लगाने से कोई लाभ नहीं हो रहा है। जाल में गुलदार आ नहीं रहा है और रात में परिवारों को डर लग रहा है। लोगों की रात की नींद उड़ चुकी है, कई परिवार एक साथ सो रहे हैं।कहा कि बच्चे का दुख असहनीय है, सरकार कुछ भी करे, गुलदार को पकड़े या उसे आदमखोर घोषित कर गोली मारने के आदेश दे।

अब खुद पहरा देंगे गांव के पुरुष

गांव के पुरुषों का कहना है कि अब हम वन विभाग की टीम के भरोसे नहीं रहेंगे। हम खुद घर के बाहर बैठेंगे। वनकर्मी बगैर हथियार के यहां पर मोर्चा ले रहे हैं। अब ग्रामीण खुद लोहा लेंगे और गांव में पहरा देंगे। कहा, घरों के आसपास जंगल को साफ किया जाना चाहिए। बच्चों के स्कूल जाने के लिए बस की व्यवस्था की जाए ताकि बच्चों की सुरक्षा को लेकर कोई खतरा न हो।

एक नज़र

आंगनबाड़ी केन्द्रों का अधिकारियों ने किया आकस्मिक निरीक्षण कर

शहडोल। अनुपपुर कलेक्टर श्री आशीष वशिष्ठ के निर्देश पर आज जिले के लगभग 100 आंगनबाड़ी केन्द्रों का विभिन्न विभागों के अधिकारियों को पाँच-पाँच आंगनबाड़ी केन्द्र आवंटित करते हुए आकस्मिक निरीक्षण कराया गया। निरीक्षण के दौरान अधिकारियों ने आंगनबाड़ी पहुंचकर आंगनबाड़ी में 3 से 6 वर्ष के दर्ज कुल बच्चों की जानकारी, निरीक्षण के समय उपस्थित बच्चे, नाश?ता तथा भोजन प्रदाय, आंगनबाड़ी केन्द्रों की स्वच्छता तथा महिला बाल विकास केन्द्रों के पर्यवेक्षकों द्वारा निरीक्षण कर जानकारी ली गई। निरीक्षणकर्ता अधिकारियों द्वारा आवंटित आंगनबाड़ी केन्द्रों का निरीक्षण कर निरीक्षण प्रपत्र में जानकारी प्रस्तुत की गई है।

ग्राम केरहा में निकाली गई विकसित भारत संकल्प यात्रा

संवाददाता

शहडोल। केन्द्र सरकार द्वारा संचालित योजनाओं के प्रचार-प्रसार हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली जा रही है। इसी कड़ी में जिले के जनपद पंचायत सोहागपुर के ग्राम पंचायत केरहा में विकसित भारत संकल्प यात्रा निकाली गई। विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान स्थानीय लोगों द्वारा आईईसी वैन का स्वागत फूलों मालाओं के साथ किया गया। यात्रा के दौरान लोगों को केन्द्र सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। साथ ही योजनाओं के प्रति जागरूक भी किया गया। एवं योजनाओं के पात्र हितग्राहियों को हितलाभ का वितरण भी किया गया।

एक जनवरी से सरकारी विभाग नहीं खरीदेंगे डीजल-पेट्रोल वाहन, मुख्यमंत्री ने दिए निर्देश

शिमला। मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार हिमाचल में ई-व्हीकल को बढ़ावा दे रही है। लंबे रूटों पर भी ई-बसें चलाने का विचार है। हिमाचल को हरित ऊर्जा राज्य बनाने तथा ई-वाहनों को प्रोत्साहित करने के दृष्टिगत मुख्यमंत्री सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने सभी सरकारी विभागों को एक जनवरी 2024 से डीजल या पेट्रोल वाहन न खरीदने के निर्देश दिए हैं। अति-आवश्यक होने पर केवल प्रदेश मंत्रिमंडल की स्वीकृति के बाद ही विभाग पेट्रोल या डीजल वाहनों की खरीद कर सकेंगे। अपने पहले बजट में ही सीएम सुक्खू ने व्यवस्था परिवर्तन की दिशा में बड़ा कदम उठाते हुए विद्युत चालित वाहन (ई-वाहन) पर राज्य सरकार का विजन स्पष्ट किया और आगे बढ़कर स्वयं भी इलेक्ट्रिक वाहन का उपयोग कर मिसाल पेश की। राज्य सरकार के प्रयासों के कारण ही आज सरकारी ई-वाहनों की संख्या 185 हो गई है, जबकि प्रदेश में पंजीकृत निजी इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या 2733 तक पहुंच गई है। सीएम ने कहा कि राज्य सरकार हिमाचल में ई-व्हीकल को बढ़ावा दे रही है। परिवहन विभाग पहला ऐसा विभाग है, जिसमें ई-वाहन का उपयोग शुरू किया गया तथा चरणबद्ध तरीके से सभी सरकारी महकमों में भी इन वाहनों का संचालन सुनिश्चित किया जा रहा है। ई-वाहन केवलमात्र एक नई शुरुआत नहीं है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण के प्रति राज्य सरकार की प्रतिबद्धता को भी दर्शाती है। आने वाली पीढ़ियों के लिए हमें पर्यावरण को सुरक्षित बनाना होगा तथा इसकी शुरूआत आज से ही करनी होगी। सरकारी विभागों में गाड़ियों की आवश्यकता पूरी करने के लिए राज्य सरकार ने ई-टैक्सी अनुबंध पर लेने की अनुमति प्रदान की है। 680 करोड़ रुपये की राजीव गांधी स्वरोजगार स्टार्टअप योजना के तहत युवाओं को ई-टैक्सी के परमिट प्रदान किए जा रहे हैं। ई-टैक्सी की खरीद पर 50 प्रतिशत की सब्सिडी भी दी जा रही है। इन गाड़ियों को घर पर भी चार्ज किया जा सकता है तथा राज्य सरकार भी चार्जिंग के लिए आधारभूत ढांचा तैयार कर रही है। ई-वाहनों को बढ़ावा देने के लिए 6 राजमार्गों को ग्रीन कोरिडोर के रूप में विकसित करने का निर्णय लिया गया है। प्रदेश में ई-वाहन चार्जिंग स्टेशनों की स्थापना के लिए परिवहन विभाग ने 54 स्थानों को अंतिम रूप दिया है, जिनमें से कुछ लगभग बनकर तैयार हैं। इसके अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश पथ परिवहन निगम की सभी डीजल गाड़ियों को चरणबद्ध तरीके से ई-बसों में बदला जा रहा है। हाल ही में ई-बसें बनाने वाली कंपनियों के साथ बैठक में हिमाचल की भौगोलिक परिस्थितियों के अनुरूप गाड़ियां तैयार करने का अनुरोध किया गया है। सीएम सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार लंबे रूटों पर भी ई-बसें चलाने जा रही है। एचआरटीसी के बेड़े में टाइप-1, 2 और 3 ई-बसों को चरणबद्ध तरीके से शामिल किया जा रहा है, ताकि 31 मार्च 2026 तक हिमाचल को स्वच्छ व हरित ऊर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य हासिल किया जा सके।

स्व सहायता समूह में जुड़कर अंजू यादव बनी लखपति

संवाददाता

शहडोल। मध्यप्रदेश के शहडोल जिले कि जनपद पंचायत सोहागपुर के ग्राम हर्री निवासी श्रीमती अंजू यादव स्व सहायता समूह में जुड़कर लखपति बन गई हैं। ग्राम हर्री में आयोजित विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान अंजू यादव ने बताया कि मैं किसी कार्य करने के लिए घर से बाहर नहीं निकलती थी। मुझे जब स्व सहायता समूह के बारे में जानकारी हुई तो मैं समूह में जुड़ी और स्व सहायता समूह में जुड़कर मैने 50 हजार रूपए का ऋण ली। उन्होंने बताया कि मैं लोन लेकर सिंचाई के लिए बोर करवाई, पहले एक सीजन में ही फसल होती थी और अब दोनो सीजन में फसल हो रही है, फसल के साथ-साथ सब्जी का उत्पादन कर भी कर रही हू। अंजू ने बताया कि मुझे एग्रीकल्चर विभाग द्वारा प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया और अब मै फसल के साथ-साथ सब्जी का उत्पादन कर बाजारों में बेच रही हू व अच्छी आमदनी होने से लखपति बनकर, बच्चो की पढ़ाई बेहतर ढंग से करवा रही हूं। श्रीमती अंजू यादव ने स्व सहायता समूह के माध्यम से लोन प्रदान करने के लिए देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी को तहे दिल से धन्यवाद दिया।

बैगा बाहुल्य क्षेत्रों में योजनाओं के प्रति किया जा रहा जागरूक

संवाददाता

शहडोल। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान के अंतर्गत कलेक्टर श्रीमती वंदना वैद्य के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में शहडोल जिले के बैगा बाहुल्य क्षेत्रों में आईईसी अभियान चलाकर अधिकारी एवं कर्मचारियों द्वारा पहुंचकर केंद्र सरकार द्वारा संचालित जन कल्याणकारी योजनाएं पीएम आवास, उज्ज्वला योजना उज्ज्वला योजना,वन धन योजना, पीएम गरीब कल्याण योजना जैसे अन्य कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी हेतु जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है। इसी कड़ी में आज सहायक आयुक्त आदिम जाति कल्याण विभाग श्री आनंद राय सिन्हा द्वारा बैगा बाहुल्य क्षेत्र मैकी व अन्य क्षेत्रों में जाकर योजनाओं की जानकारी बैगा समुदाय के लोगो को दी गई है। प्रधानमंत्री जनजाति आदिवासी न्याय महा अभियान 2 जनवरी 2024 तक जारी रहेगा।

कोतवाली पुलिस ने चोरी गई कार 02 आरोपियों से किया बरामद

➤घटना में प्रयुक्त बोलेरो वाहन को पुलिस ने किया जप्त।

संवाददाता

शहडोल। दिनांक 19।12।23 को थाना कोतवाली में फरियादी संजीव निगम (पत्रकार) निवासी घरौला मोहल्ला द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराया गया कि, दिनांक 18-19।12।23 की रात्रि को ङ्घङ्घङ्घ 300 कार क्रमांक एमपी 65 टी 1382 घरौला मोहल्ला में उसके के बाहर से किसी व्यक्ति ने चोरी कर लिया है। जिस पर थाना कोतवाली में चोरी का अपराध अज्ञात व्यक्ति के विरूद्ध पंजीबद्ध किया गया था। कोतवाली पुलिस द्वारा निरंतर अज्ञात वाहन एवं अज्ञात चोरों की तलाश के लिए लगातार प्रयास किये जा रहे थे। इसी क्रम में खूफिया सूत्रों से सूचना के आधार पर दिनांक 30/12/23 को आरोपी राजा उर्फ राजेश्वर सिंह एवं राजू उर्फ आनंद पासी दोनों निवासी जमुना कॉलरी थाना भालूमाड़ा के कब्जे से उक्त वाहन को कोनी तिराहा से बरामद किया जाकर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पुलिस द्वारा प्रकरण में उपयोग किये गए बोलेरो वाहन को भी जप्त किया गया है। आरोपियों को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय पेश किया गया है। उक्त कार्यवाही में थाना प्रभारी कोतवाली रावेनद्र तिवारी के नेतृत्व में सउनिओ राकेश बागरी, रजनीश तिवारी, कामता पयासी एवं प्रआर0 मायाराम की सराहनीय भूमिका रही।

महबूबा मुफ्ती ने पुंछ जिले के बफलियाज में पुलिस का नाका तोड़ा, जबरदस्ती पैदल गांव टोपी की तरफ निकली

पुंछ। पीडीपी अध्यक्ष महबूबा मुफ्ती शनिवार को मुगल रोड के रास्ते कश्मीर से पुंछ जिले की तरफ आ रही थीं। इस दौरान उन्होंने मुगल रोड पर पुलिस की तरफ से बफलियाज लगाए गए नाके को जबरदस्ती तोड़ दिया। इसके बाद वह गांव टोपी ओर आगे बढ़ गईं। गौरतलब है कि पिछले तीन दिनों से जिले की सुरनकोट तहसील के देहरागली टोपीपीर में नेताओं का आना-जाना जारी है क्योंकि यहां पर तीन ग्रामीणों की संगीत परिस्थितियों में मौत हुई थी। इसी के चलते महबूबा मुफ्ती भी आज यहां आई थीं। परंतु उन्हें टोपीपीर जाने की इजाजत नहीं थी, इसके बाद पुलिस द्वारा मेहबूबा मुफ्ती बुफ लियाज में रोका गया परंतु अपने वाहनों से उतरकर जबरदस्ती नाका तोड़कर पैदल ही टोपी पीर की तरफ आगे बढ़ गई।

वाहन की गति सीमा बताएंगे सड़कों पर लगे स्पीड साइन बोर्ड

ओवर स्पीड पर दिखेगी रेड लाइट

संवाददाता

देहरादून। फिलहाल प्रदेश में देहरादून, हरिद्वार, ऊधमसिंह नगर नैनीताल जिलों में दस स्पीड साइन बोर्ड लगाए गए हैं। प्रदेश में सड़क हादसों को रोकने के लिए यातायात निदेशालय की ओर से सड़कों पर डिजिटल स्पीड साइन बोर्ड लगाए गए हैं। इससे सड़क पर चलते समय वाहन स्वामी को उनकी गाड़ी की गति की सूचना मिलेगी। यातायात निदेशालय का मानना है कि इससे वाहन स्वामी बोर्ड में देखकर खुद अपनी स्पीड कम करेगा। पुलिस महानिरीक्षक व निदेशक यातायात मुख्तार मोहसिन ने बताया कि सड़क दुर्घटना के मुख्य कारण ओवरस्पीड का विश्लेषण किया गया। इसके बाद प्रदेश में गतिसीमा के निर्धारण के लिए उपकरणों से गतिसीमा की चेतावनी के लिए प्रदेश में पहली बार हाईटेक गतिसीमा बोर्ड (डिजिटल स्पीड साइन बोर्ड) लगाए गए हैं। बताया कि यह साइन बोर्ड रडार तकनीक के उपयोग से आगे आ रहे वाहनों की गति को मापने का काम करता है। जब कोई वाहन इस साइन बोर्ड के पास से निकलेगा तो उसकी गति साइन बोर्ड पर दिख जाएगी। निर्धारित स्पीड से होने पर यह बोर्ड लाल लाइट दिखाएगा।

दून में यहां लगे हैं स्पीड साइन बोर्ड

यातायात निदेशालय की ओर से दून में तीन स्थानों पर स्पीड साइन बोर्ड लगाए गए हैं। जो हरिद्वार बाइपास पर नियल हिल्स अपार्टमेंट, राजपुर रोड पर होटल सनराइज, ईसी रोड पर सीएसडी डिपो आराघर के पास लगाए गए हैं।

स्पीड साइन बोर्ड को देखकर आएगा मनोवैज्ञानिक दबाव

पुलिस महानिरीक्षक व निदेशक यातायात मुख्तार मोहसिन ने बताया कि डिजिटल स्पीड साइन बोर्ड पर अपने वाहन की गति देखने के बाद वाहन चालकों पर एक मनोवैज्ञानिक दबाव आएगा। इससे अगर उनके वाहन की रफ्तार अधिक होगी तो वह अपने वाहन की रफ्तार को खुद ही कम कर लेंगे। इसके साथ ही यदि किसी वाहन में बच्चे उस बोर्ड को देखेंगे तो वह अपने माता-पिता या चालक को बताएंगे कि आपके वाहन की गति अधिक है या कम, इससे बच्चे भी भविष्य के लिए गति-सीमा के पालन के लिए प्रेरित होंगे।

विंटर लाइन कार्निवाल में सांस्कृतिक कार्यक्रमों रही धूम, बैंड प्रस्तुति ने बांधा समां

एजेंसी

देहरादून। लंढौर चौक पर सारेगामा फेम कीर्ति के साथ स्थानीय कलाकारों ने भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। मसूरी विंटर लाइन कॉर्निवाल के तीसरे दिन शहर के विभिन्न चौक-चौराहों पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम, खेलकूद, आईटीबीपी कराटे शो, बैंड प्रस्तुति, ट्रेजर हंट और स्टार गेजिंग ने स्थानीय लोगों का मन मोह लिया। शहर में पहुंचे पर्यटक भी कार्यक्रमों के माध्यम से पहाड़ की लोक संस्कृति के गवाह बने और यादगार पलों को कैमरे में कैद किया। मालरोड में स्केटिंग प्रतियोगिता में बच्चों ने बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। साथ ही शहीद स्थल पर विभिन्न सांस्कृतिक ग्रुपों ने कार्यक्रम की प्रस्तुति देकर लोगों का भरपूर मनोरंजन किया। इस मौके पर मसूरी महोत्सव समिति सचिव एवं एसडीएम डॉ. दीपक सैनी ने लोगों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। कई पर्यटकों ने पर्यटक स्थल जॉर्ज एवरेस्ट में कार्टोग्राफी म्यूजियम पहुंचे और जार्ज एवरेस्ट की जीवनी के बारे में जानकारी जुटाई। गढ़वाल टैरेस में रोट्रेक्ट क्लब मसूरी ने ट्रेजर हंट कार्यक्रम आयोजित किया जिसका बच्चों, पर्यटकों ने खूब आनंद लिया। लंढौर में ओपन माइक में नन्हे कलाकार भी दिखेलंढौर चौक में विंटर लाइन कार्निवाल के कार्यक्रम आयोजित किए गए। ओपन माइक में स्थानीय नन्हे कलाकारों और युवाओं ने गायन प्रस्तुतियां देकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया। कार्यक्रम में स्थानीय व्यापारियों ने बढ़-चढ़कर शिरकत की। मसूरी ट्रेडर्स एसोसिएशन अध्यक्ष रजत अग्रवाल ने कहा कि आगामी 2024 में लंढौर में मेला आयोजित होगा। मालूम हो कि लंढौर के व्यापारियों ने धरना देकर यहां कॉर्निवाल के कार्यक्रम न होने पर नाराजगी जताई थी। बैंडों ने बांधा समा ⁼ लाइब्रेरी चौक पर भी सुबह 11 बजे फ्यूजन बैंड, राघव बैंड, होमगार्ड्स बैंड ने अपनी प्रस्तुति देकर सबको मंत्रमुग्ध किया। मालरोड में गढ़वाल टैरेस के पास रोट्रेक्ट क्लब द्वारा ट्रेजर हंट कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें 20 लोगों ने प्रतिभाग किया। स्टार गेजिंग कार्यक्रम में भी बड़ी संख्या में पर्यटक और स्थानीय लोग पहुंचे।

स्केटिंग में वर्धमान, अर्नब, अक्षय ने मारी बाजी

जिला खेल विभाग ने गढ़वाल टैरेस के पास मसूरी स्पोर्ट्स एसोसिएशन के सहयोग से रोलर स्केटिंग रोड रेस आयोजित की। जिसमें शहर के विभिन्न क्षेत्रों से करीब 30 से अधिक नन्हे खिलाड़ियों ने प्रतिभाग किया। अंडर-12 बालक वर्ग में वर्धमान खंडूरी ने प्रथम, देव गुनसोला ने दूसरा और दक्ष गुनसोला ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। अंडर-14 बालक में अर्नब गुनसोला ने प्रथम, सात्विक रमोला दूसरा और रियार्थ वैश्य ने तीसरा स्थान हासिल किया। अंडर-19 में अक्षय नागरकोटि प्रथम, आर्यन भार्गव दूसरा और उत्तवल रोहिला तीसरा स्थान हासिल किया। बालिका वर्ग अंडर-6 में आरवी नेगी ने प्रथम स्थान हासिल किया। अंडर-12 बालिका वर्ग में आगमाया गुनसोला प्रथम, सृद्धि मुयाल ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। अंडर-14 बालिका वर्ग में वान्या खंडूरी ने प्रथम, स्वाति रोहिला दूसरा और अदा जाहरा ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। अंडर-18 बालिका वर्ग में निधि वर्मा प्रथम, अदिति विश्वकर्मा ने दूसरा स्थान हासिल किया।

कल्चरल ग्रुपों ने दी प्रस्तुति

कार्यक्रम की शृंखला में मालरोड शहीद स्थल पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। जिसमें माधुरी टम्टा के जयश्री क्लब के कलाकारों ने रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। तिब्बतन कल्चरल ग्रुप देहरादून के कलाकारों ने तिब्बतन सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति दी। वहीं, लोकगायिका बीना बोहरा ने लोक गीतों की प्रस्तुति देकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इस मौके पर एसडीएम डॉ. दीपक सैनी ने सभी सांस्कृतिक ग्रुपों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया।

आईटीबीपी के जवानों ने गले से मोड़ा सरिया

आईटीबीपी अकादमी के ब्लैक बेल्ट 4 डिग्री एसआई सुशील नेगी के नेतृत्व में 30 सदस्यीय कराटे टीम ने मालरोड में कराटे की विभिन्न विधाओं का प्रदर्शन किया। इसे देखने के लिए पर्यटकों की भीड़ जुटी रही। यहां जवानों के गले से सरिया मोड़ने के करतब ने सबको हैरत में डाल दिया। कराटे टीम ने बेसिक एक्शन, बेसिक ब्रेकिंग, मुलक नॉट, मल्टीपल वेपन, अटैक डिफेंस, काता, थ्री फाइव, एडवांस ब्रेकिंग में रिंग गोले के अंदर से बाहर निकलना, मारबल ब्रेकिंग, ग्लास बेक्रिंग आदि का भी प्रदर्शन किया। कराटे शो में जिलाधिकारी सोनिका ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की।

जनपद हापुड से ब्यूरो चीफ चेतन कुमार

नीरज शुक्ला रामनगर बाराबंकी संवाददाता

द अचीवर टाइम्स ब्यूरो चीफ हरदोई पत्रकार एसोसिएशन मंत्री

अर्जुन यादव कैमरामैन लखनऊ

अनुज कुमार संवाददाता हरदोई

मोहित शुक्ला कैमरामैन लखनऊ

माल संवाददाता विकास सैनी

मलिहाबाद संवाददाता अनुभव यादव

पॉलिटिक्स संवाददाता अवधेश यादव

लखनऊ संवाददाता निखिल मिश्रा

संवाददाता आशीष सिंह उन्नाव

समीर सिंह अमेठी ब्यूरो

क्राइम हेड
पार्थ कुमार

लखनऊ संवाददाता निखिल मिश्रा

प्रधान संपादक विवेक श्रीवास्तव

स्वास्थ्य हेड रघुनाथ सिंह

यूपी हेड प्रशांत अवस्थी

लखनऊ ब्यूरो निर्मल सैनी

स्वामी, प्रकाषक, मुद्रक विवेक श्रीवास्तव द्वारा ओम साई क्रियेषन्स, आषा काम्प्लके स, इन्दिरा नगर लखनऊ से मुद्रित एव ं पहला तल, निधि काम्प्लेक्स, विकास नगर लखनऊ (उ0प्र0) से प्रकाषित।
RNI No.UPHIN/2015/6090 सम्पादक- विवेक श्रीवास्तव, फोन नं0- 8004949556, 7570901365 Email. info@theachievertimes.com किसी भी वाद विवाद का निस्तारण लखनऊ न्यायालय ही मान्य होगा।

समाचार-पत्र का मुख्य उद्देय ग्रामीण भारत का सत प्रतिशत मीडिया कवरेज कर समाज में फैला भ्रष्टाचार सामाजिक बुराइयों एवं कुरीतियों को अपने स्तर पड़ताल करके सम्बन्धित उच्चअधिकारियों को ध्यानकर्षण कर उन्हें समाप्त कराना है।